हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार 15 फरवरी 2026

10 बेस्ट नायिका सवयंवी और बेस्ट नायक का खिताब

10 बापड़ोली में खुला पहला सामुदायिक केंद्र

खबर संक्षेप

गोशाला से दानपात्र चोरी करने का आरोपित काबू

नारनौल। शहर थाना पुलिस ने त्वरित कार्यवाही करते हुए श्रीगोपाल गौशाला में हुई दानपात्र चोरी की वारदात को सुलझा लिया है और इस मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार किए गए आरोपित की पहचान दीपक निवासी नारनौल के रूप में हुई है। 12 फरवरी को गौशाला के कोषाध्यक्ष नवीन कुमार ने पुलिस को दी गई शिकायत में बताया था कि गंदा नाला रोड स्थित श्री गोपाल गौशाला के कार्यालय से शाम करीब 6:30 से 7:00 बजे के बीच दानपात्र चोरी हो गया था, जिसमें करीब छह से सात हजार रुपये की राशि थी।

यश सुनील ने किया देश का प्रतिनिधित्व

नारनौल। अटेली क्षेत्र के गांव चंदपुरा वासी कोच यश सुनील शर्मा थाईलैंड के फुकेत में अंतराष्ट्रीय फंक्शनल कोचिंग ट्रेनिंग एवं सहोग कार्यक्रम में देश का किया प्रतिनिधित्व किया है। यह प्रतिष्ठित कार्यक्रम दो से सात फरवरी तक विश्व-प्रसिद्ध फिटनेस ब्रांड कॉन्ग स्ट्रेंथ द्वारा आयोजित किया गया था, जिसमें यश सुनील शर्मा को विशेष आमंत्रण पर शामिल किया गया। इस सहयोग में उन्होंने आधुनिक फंक्शनल ट्रेनिंग तकनीकों और वैश्विक कोचिंग मानकों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया।

मंदिर की जमीन से अवैध कब्जा हटवाने की मांग

महेंद्रगढ़। शहर के मौहल्ला बांस में मां संतोषी मंदिर की जमीन पर अवैध कब्जा हटवाने के लिए मौहल्ला वासियों ने अतिरिक्त उपायुक्त तरुण कुमार पावरिया को शिकायत दी। शिकायत में एक नामजद व्यक्ति की ओर से मंदिर की जमीन पर कब्जा करने से मंदिर का कार्य बाधित हो रहा है। शिकायतकर्ता वासुदेव व विकास गर्ग ने बताया कि मौहल्ला बांस में कैलाश कुमार कौशिक ने संतोषी माता मंदिर के निमित करवाई थी। गणमान्य लोगों ने मिलकर एक कमेटी बनाई गई।

स्कूलों में विद्यार्थियों की आवाज से तैयार होगा एआई मॉडल, 10 स्कूलों का चयन

- शिक्षा निदेशालय ने दिए निर्देश : प्रदेश में 10 जिलों का चयन, महेंद्रगढ़ जिला भी शामिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित मशीन लर्निंग टूल के प्रशिक्षण के लिए विद्यार्थियों की आवाज (ऑडियो) संग्रह करने की प्रक्रिया विद्यालय शिक्षा निदेशालय ने शुरू कर दी है। इस संबंध में निदेशालय ने जिला मौलिक शिक्षा अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए हैं।

जारी पत्र के अनुसार एआई आधारित आकलन प्रणाली विकसित करने के उद्देश्य से हरियाणा के 10 जिलों (अंबाला, कैथल, झज्जर, महेंद्रगढ़, नूंह मेवात, पलवल, पंचकूला, रोहतक, सिरसा व यमुनानगर) के 110 चयनित विद्यालयों में कक्षा पहली से पांचवीं तक के लगभग 60-60 विद्यार्थियों का ऑडियो संग्रह किया जाएगा। यह प्रक्रिया विद्यालयों में शिक्षकों की निगरानी में सुरक्षित लिंक के माध्यम से संपन्न की जाएगी। निदेशालय ने स्पष्ट किया है कि विद्यार्थियों के ऑडियो संग्रह से पहले अभिभावकों की लिखित सहमति लेना अनिवार्य होगा। इसके लिए विशेष सहमति पत्र (कंसेंट फॉर्म) उपलब्ध कराया गया है, जिसमें अभिभावकों को परियोजना की पूरी जानकारी दी जाएगी। इस पत्र में यह भी उल्लेख है कि एकत्रित डेटा का उपयोग केवल शैक्षणिक उद्देश्यों और एआई मॉडल को बेहतर बनाने के लिए किया जाएगा। यह परियोजना वाधवानी एआई (एलईएचएस) के सहयोग से संचालित की जा रही है, जो राज्य सरकार के लिए डेटा प्रोसेसर के रूप में कार्य कर रही है।

आवाज रिकॉर्ड सहमति पत्र

इसमें नाम, लिंग, कक्षा और विद्यालय से संबंधित विवरण और आवाज रिकॉर्डिंग का डाटा मुख्य है। इसके उपयोग की बात करें तो यह डेटा शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए एआई मॉडल बनाने और बेहतर करने में उपयोग किया जाएगा। डेटा का उपयोग इन मॉडलों को बेहतर बनाने के लिए किया जा सकता है। डेटा न तो किसी को बेचा जाएगा और न किसी से सांझा किया जाएगा। किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग नहीं किया जाएगा।

जिले में इन स्कूलों को किया चिन्हित

जिला में 10 स्कूलों को चिन्हित किया है। इनमें राजकीय प्राथमिक पाठशाला खोड़मा, कुंजपुरा, राजकीय मॉडल संस्कृति प्राइमरी स्कूल मुकुंदपुरा, राजकीय प्राइमरी स्कूल सराय, राजकीय कन्या प्राइमरी स्कूल डोहरकलां, राजकीय प्राइमरी स्कूल रामबास, राजकीय कन्या मॉडल संस्कृति प्राइमरी स्कूल आजमाबाद मौखूता, राजकीय प्राइमरी स्कूल कारोली, राजकीय प्राइमरी स्कूल नांगलकाठा व राजकीय प्राइमरी स्कूल हुडिना शामिल है।

-पवन भारद्वाज, खण्ड शिक्षा अधिकारी

आवाज रिकॉर्ड सहमति पत्र

निदेशालय ने आश्वस्त किया है कि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत पहचान सुरक्षित रखी जाएगी और डेटा को डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन अधिनियम, 2023 के प्रावधानों के अनुसार संरक्षित किया जाएगा। सरकार का मानना है कि इस पहल से हिंदी भाषा में एआई आधारित शिक्षण और मूल्यांकन प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा, जिससे विद्यार्थियों के सीखने के स्तर का सटीक आकलन संभव होगा। निदेशालय ने सभी संबंधित अधिकारियों और विद्यालयों को निर्देश दिए हैं कि निर्धारित समय सीमा में ऑडियो संग्रह की प्रक्रिया पूरी कर रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

सीवर ओवरफ्लो से दुकानदार बेहाल, टूटी लाइन ने बढ़ाई आफत

कपड़ा व जूता मार्केट में बह रहा गंदा पानी, बदबू से सांस लेना हुआ दूभर

- नारनौल की सबसे व्यस्त 'पार्क गली' बनी नरक
- लोगों को सता रहा बीमारियां फैलने का डर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

सीवरों का गंदा पानी सड़कों पर बहता रहता है, जिससे कीचड़ और गंदगी का माहौल बना हुआ है। दुकानदारों का कहना है कि उन्होंने कई बार शिकायतें कीं, लेकिन समस्या का कोई स्थायी समाधान नहीं निकला।

शहर की सबसे व्यस्त और प्रमुख व्यावसायिक केंद्र 'पार्क गली' इन दिनों विकास के दावों की हकीकत बयां कर रही है। कपड़ा और जूता मार्केट के रूप में मशहूर इस गली में आए दिन सीवर ओवरफ्लो होने से दुकानदारों, व्यापारियों और ग्राहकों का जीना मुहाल हो गया है। स्थिति इतनी बदतर हो चुकी है कि गंदे पानी की बदबू के बीच काम करना असंभव सा हो गया है और अब बीमारियां फैलने का गंभीर खतरा भी मंडराने लगा है।

बता दें कि पार्क गली शहर का वह हिस्सा है, जहां सुबह से लेकर रात तक ग्राहकों की भारी भीड़ रहती है। शहरभर ही नहीं, ग्रामीण लोग खासकर युवा यहां खरीदारी के लिए आते हैं, लेकिन अफसोस, इस व्यस्ततम मार्केट में कदम रखते ही नाक बंद करनी पड़ती है। सीवरों का गंदा पानी सड़कों पर बह रहता है, जिससे कीचड़ और गंदगी का माहौल बना हुआ है। दुकानदारों का कहना है कि उन्होंने कई बार शिकायतें कीं, लेकिन समस्या का कोई स्थायी समाधान नहीं निकला। दी रेडीमेड वस्त्र एसोसिएशन के प्रधान धर्मबीर यादव, रोहतास सैनी, प्रकाश यादव, जयप्रकाश गुप्ता, लाला मोहनलाल आदि दुकानदारों ने प्रशासन को चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही सीवर लाइन को दुरुस्त नहीं किया गया और गंदगी से निजात नहीं मिली, तो उन्हें धरना-प्रदर्शन करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

नारनौल। मोटर लगाकर की जा रही सीवर की निकासी।

बीमारियों का बढ़ा खतरा

गंदे पानी के कारण मार्केट में हर समय भयंकर बदबू रहती है। व्यापारियों का कहना है कि इस वातावरण में घंटों बैठना बीमारियों को सीधे तौर पर निमंत्रण दे रहा है। ग्राहक गंदा पानी देखकर दुकान में आने से कतराते हैं, जिससे व्यापार पर भी बुरा असर पड़ रहा है। संक्रमण फैलने के डर से लोग अब इस गली से गुजरने में भी कतरा रहे हैं। गंदा पानी मार्केट में बार-बार भरने से इसमें मच्छर पनपते रहते हैं। अब गर्मी का सीजन की शुरूआत होने से मक्खियां भी मंडराना शुरू हो गई है। ऐसे में शहर की स्वच्छता को ही ग्रहण नहीं लग रहा, बल्कि बीमारियों के फैलने का भी डर बन गया है। सांस रोगियों को जहां एलर्जी होने का खतरा है।

यह बोले अधिकारी

पार्क गली की सीवर समस्या का समाधान करने के कई बार प्रयास किए जा चुके हैं। पिछली बार इसे ठीक भी कर दिया था, लेकिन अब बिजली निगम ने गर्ल्स आईटीआई के पास गंदे नाले वाली जगह पर जब बिजली के पोल पीछे शिफ्ट किए, तब उन्होंने खंभे गाड़ने में लापरवाही बरत दी और सीवर लाइन को क्षतिग्रस्त कर दिया। क्षतिग्रस्त वाली जगह से सीवर लाइन अवरुद्ध हो गई तथा वह बैक मारने लगी। अब वहां पक्की सड़क बन चुकी है, जिसे तोड़ने के लिए नगर परिषद से अनुमति मांग रखी है। जैसे ही अनुमि मिल जाएगी, उस पर काम शुरू कर दिया जाएगा। -आकाश, जेई जनस्वास्थ्य विभाग, नारनौल।

खंभा गाड़ते वक्त टूटी लाइन

हाल ही में पार्क गली की सीवर समस्या और अधिक विकराल हो गई है। सूत्रों के मुताबिक, गर्ल्स आईटीआई के पास बिजली का खंभा गाड़ने के दौरान लापरवाही से सीवर लाइन तोड़ दी गई। इस घटना के बाद लाइन टूटी जगह से पूरी तरह ब्लॉक हो गई है, जिससे पानी की निकासी बिल्कुल रुक गई है। पार्क गली के सीवर को गंदे नाले से गुजरती सीवर लाइन से जोड़ रखा है, लेकिन लाइन टूटने उपरांत निकासी न होने के कारण सीवर का पानी सड़कों पर बैक मार रहा है और पार्क गली ओवरफ्लो होकर बदबूदार झील में तब्दील हो गई है।

हो रहा टालमटोल

सबसे हास्यास्पद और दुखद पहलू यह है कि समस्या का पता होने के बावजूद जिम्मेदार विभाग जनस्वास्थ्य एवं नगर परिषद इसे ठीक करने में टालमटोल कर रहे हैं। जनस्वास्थ्य विभाग ने खंभे वाली जगह टूटी लाइन को ठीक करने की बात तो मानी है, लेकिन अब उसने खंभे वाली जगह नगर परिषद से सड़क तोड़ने की अनुमति मांग ली है। फाइलों और अनुमतियों के इस खेल में आम दुकानदार और नागरिकों में रोष है।

मंडी अटेली। स्पीड ट्रायल इन ट्रैकों से दौड़ेगा इंजन। फोटो : हरिभूमि

अटेली-नारनौल रेलखंड पर रफ्तार की परीक्षा आज

- रेल सुरक्षा आयुक्त की मौजूदगी में 130 किमी प्रति घंटा से दौड़ेगा इंजन

मंडी अटेली। अटेली-नारनौल रेलखंड पर दोहरीकरण कार्य पूरा होने के बाद 15 फरवरी को इस मार्ग की रफ्तार और सुरक्षा की अंतिम परीक्षा ली जाएगी। रेल सुरक्षा आयुक्त सेक्शन का विस्तृत निरीक्षण करेंगे और उनकी उपस्थिति में 130 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से इंजन दौड़ाकर स्पीड ट्रायल किया जाएगा। काठूवास से नारनौल तक की परियोजना अब समापन के चरण में पहुंच चुकी है और क्षेत्र के लिए इसे बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है। सुबह से ही अटेली से नारनौल तक रेलवे अधिकारियों और तकनीकी टीमों की हलचल तेज रही। ट्रैक की मजबूती, सिग्नलिंग सिस्टम, ओवरहेड उपकरण और सुरक्षा मानकों की बारीकी से जांच की गई, ताकि निरीक्षण के दौरान किसी प्रकार की कमी न रह जाए। विभिन्न विभागों के अधिकारी मौके पर पहुंच चुके हैं और पूरे सेक्शन पर सतर्क नजर रखी जा रही है। यह रेलमार्ग रेवाड़ी से नारनौल होते हुए फुलेरा तक जाता है।

नांगल नूनिया में संदिग्ध परिस्थितियों में वृद्धा की मौत, पुलिस ने की जांच शुरू

नारनौल। गांव नांगल नूनिया में मकान से संदिग्ध परिस्थितियों में एक वृद्ध महिला की लाश मिली है। मकान के एक कमरे में आग भी लगी हुई मिली। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए नागरिक अस्पताल भिजवाया। जानकारी मुताबिक निजामपुर पुलिस को शनिवार सुबह सूचना मिली कि गांव नांगल नूनिया में स्थित बूस्टिंग स्टेशन नंबर-दो के पास एक मकान से धुंआ उठता हुआ दिखाई दे रहा है, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस जब मकान के अंदर दाखिल हुई तो वहां पर बने एक कमरे की चौखट के पास पड़ा वृद्ध महिला का शव हुआ मिला। पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई करते हुए शव को अपने कब्जे में लिया और उसे नागरिक अस्पताल नारनौल पहुंचाया। मृतक महिला की पहचान करीब 75 वर्षीय बनारसी देवी पत्नी गुलजारी लाल के रूप में हुई है, जो गांव मूसनौता की रहने वाली, के रूप में हुई है। पता चला है कि वह वृद्धा गांव नांगल नूनिया में अपनी रिश्तेदारी में आई थी। परिवार रात को किसी शादी में गया हुआ था और वह घर में अकेली थी।

प्रिंसिपल के खाते से उड़ाए 4 लाख, पेट्रोल पंपों पर डीजल भरवाकर खपा दी रकम, एक गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

साइबर अपराधियों की धरपकड़ के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत साइबर क्राइम थाना की पुलिस टीम को सफलता हासिल हुई है। पुलिस ने एक निजी स्कूल के प्रिंसिपल के बैंक खाते में सेंध लगाकर लाखों रुपये उड़ाने वाले गिरोह के एक आरोपित अंजुम निवासी रनियाला खुर्द जिला पलवल को गिरफ्तार किया है। जिसको न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है। शिकायतकर्ता ने शिकायत दर्ज कराई थी कि अज्ञात साइबर ठगों ने उनके मोबाइल पर एटीएम पिन रीसेट करने और नेट बैंकिंग की ट्रांजेक्शन लिमिट बढ़ाने का मैसेज भेजकर उसके एचडीएफसी बैंक खाते से करीब चार लाख रुपये ठग लिए थे। पुलिस ने मामले में तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर जांच शुरू की। आरोपितों ने ठगी की रकम को पेट्रोल कार्ड के जरिए विभिन्न राज्यों में घुमाया। कुल राशि में से एक लाख 50 हजार रुपये नूंह-तावडू रोड गुरुग्राम स्थित एक पेट्रोल पंप पर ट्रांसफर किए गए। इसके अलावा महाराष्ट्र, तेलंगाना और मध्य प्रदेश के पेट्रोल पंपों पर भी राशियाँ भेजी गईं। पुलिस टीम ने जब पेट्रोल पंप के रिकॉर्ड की जांच की तो सामने आया कि वहां ट्रांसफर की गई 1.50 लाख रुपये की राशि आरोपित अंजुम और उसके साथी के खाते में जमा हुई थी, जिसका उपयोग उन्होंने अपने वाहनों के ईंधन खर्च/डीजल भरवाने के लिए किया।

नारनौल। पुलिस गिरफ्त में आरोपित।

सेल्समैन से लूटी शराब नकदी व मोबाइल फोन

नारनौल। बड़कोदा बाइपास के नजदीक शराब ठेके पर अज्ञात बदमाश सेल्समैन से मारपीट कर शराब, नकदी और मोबाइल फोन लूटकर फरार हो गए। पीड़ित ने पुलिस को शिकायत दी है, जिस पर पुलिस कार्रवाई में जुट गई। गाहड़ा निवासी पीड़ित इंद्रजीत ने थाना सदर में दी शिकायत में बताया कि वह संदीप पोसवाल के शराब ठेकों की देखरेख करता है। बड़कोदा बाईपास के पास स्थित अंग्रेजी और देसी शराब के ठेके पर धर्मेंद्र पुत्र हसराज निवासी तिमानपुर, जिला मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) सेल्समैन के रूप में कार्यरत है। धर्मेंद्र ने फोन पर सूचना दी कि तीन बदमाश बाइक पर सवार होकर आए।

विकास कार्यों पर सवाल, पुराने प्रस्तावों पर काम शुरू नहीं, नए पर कैसे होंगे काम, पार्षदों की दो टूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

शहर के विकास कार्यों को लेकर नगर पालिका प्रधान और पार्षदों के बीच छिड़ी जंग अब सार्वजनिक हो गई है। शनिवार को पीडब्ल्यूडी विश्राम गृह में आयोजित एक प्रेसवार्ता के दौरान उप-प्रधान मंजू कौशिक सहित कई पार्षदों ने प्रधान की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठाए। पार्षदों ने स्पष्ट किया कि उनकी लड़ाई किसी पद के लिए नहीं, बल्कि शहर की मूलभूत सुविधाओं के लिए है।

प्रेसवार्ता में पार्षदों ने खुलासा किया कि नगर पालिका हाउस द्वारा अब तक शहर के विकास के लिए लगभग 500 प्रस्ताव पारित किए जा चुके हैं, लेकिन विडंबना यह है कि इनमें से 10 प्रतिशत पर भी धरातल पर काम शुरू नहीं हुआ है। पार्षदों ने मांग की कि नए एजेंडे लाने से पहले पुराने रुके हुए कार्यों को पूरा किया जाए और प्रत्येक वार्ड में बिना भेदभाव के विकास कार्य शुरू किए जाएं। पार्षदों ने प्रधान के जनता के बीच बैठक करने के निर्णय पर तंज कसते हुए कहा कि यदि वे वास्तव में पारदर्शी हैं, तो वित्त समिति की महत्वपूर्ण बैठकें भी आमजन के सामने करें। उप-प्रधान मंजू कौशिक ने बताया कि 29 जनवरी की सहमति के बावजूद प्रधान ने अकेले ही एजेंडे तय किए और विरोध करने पर अमर्यादित भाषा का प्रयोग किया। इस मौके पर पार्षद ममता सोनी, देवेंद्र सैनी, राजेश सैनी, पार्षद प्रतिनिधि राव चेतन और यशपाल यादव सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

महेंद्रगढ़। रेस्ट हादस में पत्रकार वार्ता करते हुए। फोटो : हरिभूमि

गेहूं की फसल में हल्की सिंचाई करने से किसान को होगा लाभ

तापमान बढ़ने से पछेती सरसों में मावा रोग का खतरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नांगल चौधरी

फरवरी का आधा महीना खत्म होते ही तापमान में बढ़ोतरी आरंभ हो गई। बीते पांच दिनों से सुबह-शाम की नॉर्मल ठंड रह गई जिससे आमजन की दिनचर्या सुचारू हो गई। लेकिन फसलों की सेहत खतरे में पड़ गई, क्योंकि पछेती सरसों पर मावा लगने का खतरा बढ़ गया। इसके अलावा गेंहू की ग्रोथ रूक गई तथा बल्लियां निकलने की संभावना बन गई है। जिससे अनाज की पैदावार और पशुचारा उत्पादन कम होने के आसार हो गए हैं। आपको बता दें कि नांगल चौधरी-निजामपुर ब्लॉक डॉर्कजोन घोषित है, यहां कम पानी में पकने वाली फसलों को प्राथमिकता मिलती है। इसके अलावा किसानों ने सब्जी फसलों का रकबा बढ़ाना आरंभ कर दिया, जिससे परंपरागत फसल प्रभावित नहीं होती। नवंबर में गाजर व प्याज की फसल लेने के बाद विभिन्न गांवों में करीब चार हजार एकड़ रकबे पर सरसों की बुवाई हुई थी। नहरों के साथ लगते गांवों में करीब 10 हजार एकड़ रकबे पर गेंहू बुवाई हुई थी। अभी तक सर्दी पड़ने तथा बीते दिनों बारिश होने से सभी फसलें अच्छी हैं। सरसों की बंपर पैदावार होने की रिपोर्ट तैयार की गई थी, गेंहू का उत्पादन भी अच्छा होने की उम्मीद थी। लेकिन जनवरी महीने के बाद सर्दी में तेजी से गिरावट देखने को मिल रही है। रविवार का तापमान 26 डिग्री तक पहुंच गया तथा आठ-10 दिन तक बारिश के आसार नहीं। ऐसे में पछेती सरसों पर मावा रोग लगने का खतरा बढ़ गया। गेंहू की फसल अभी तक लगभग दो फीट ग्रोथ कर पाई है, लेकिन तापमान बढ़ने से फुटाव रूक गया।

नांगल चौधरी। मेघोत हाला गांव में खड़ी गेंहू की फसल। फोटो : हरिभूमि

मावठ से चने में नुकसान की हो गई भरपाई

विभागीय जानकारी के अनुसार सिंचाई के आभाव में बारानी रकबे पर खड़ी करीब 35 हजार एकड़ फसल नष्ट होने का खतरा उत्पन्न हो गया था। चने के पौधे खराब होने शुरू हो गए थे, लेकिन इसी दौरान हुई मावठ से फसलों को जीवनदान मिल गया। साथ ही चने की दाल मोटी पकेगी जिससे पैदावार बढ़ने से नुकसान की भरपाई हो सकेगी। सरसों में तेल की मात्रा बढ़ने से किसानों को मार्केट भाव अच्छे मिल सकेगें।

वाहन चोरी का शातिर आरोपी गिरफ्तार पुलिस ने किया 3 वारदातों का खुलासा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नांगल चौधरी पुलिस ने चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाते हुए एक शातिर चोर को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने आरोपित राजेश निवासी गोनेडा थाना पनियाला (राजस्थान) को गिरफ्तार किया है, जिससे पूछताछ के दौरान चोरी की तीन वारदातों का खुलासा हुआ है। मामले की जानकारी के अनुसार 24 अगस्त को गांव गोलवा स्थित श्रीश्याम लाइब्रेरी के सामने से विकास कुमार नामक छात्र की मोटरसाइकिल चोरी हो गई थी, जिसके संबंध में थाना नांगल चौधरी में भारतीय न्याय संहिता की धारा के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था।

मामले की जांच के दौरान और आरोपित से सघन पूछताछ में यह सामने आया कि आरोपित ने अपने बेटे के साथ मिलकर इस वारदात को अंजाम दिया था। आरोपित से पूछताछ में पता लगाया कि चोरी करने के बाद उसने मोटरसाइकिल को जयपुर के मानसरोवर इलाके में कबाड़ी को बेच दिया था। आरोपित को न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है। आरोपित से एक चोरी की बाइक भी बरामद की गई है। पुलिस द्वारा आरोपित से पूछताछ की जा रही है।

नारनौल। पुलिस गिरफ्त में आरोपित।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

इस समय सोना निवेश का बढ़िया विकल्प बनकर उभर रहा है। जेन जी और मिलेनियल्स यानी युवा भारतीयों का सोने पर भरोसा मजबूत बना हुआ है, लेकिन इसे खरीदने का तरीका धीरे-धीरे बदल रहा है। स्मिटन पल्सएआई के सर्वे में सामने आया है कि सोने की खरीद अब अधिक व्यक्तिगत और छोटी रकम/मात्रा में होने लगी है। 18-39 वर्ष के 5,000 उपभोक्ताओं पर आधारित इस अध्ययन के अनुसार पारंपरिक, परिवार-केंद्रित खरीदारी की जगह अब तर्क-आधारित और व्यक्तिगत फैसलों का महत्व बढ़ रहा है। जेन जी और मिलेनियल्स सोने की खरीद को अब शादी-समारोह से आगे बढ़कर व्यक्तिगत माइलस्टोन और पहली सैलरी जैसे शुरुआती निवेश के रूप में देख रहे हैं।

सुरक्षा के मामले में पहली पसंद

आधुनिक निवेश विकल्पों की बढ़ती पहुंच के बावजूद युवा भारतीयों के लिए सोना अब भी सबसे भरोसेमंद निवेश बना हुआ है। सर्वे के अनुसार यदि आज 25,000 रुपये निवेश करने हों तो 61.9% उत्तरदाता सोने को चुनेंगे। यह आंकड़ा म्यूचुअल फंड (16.6%), फिक्स्ड डिपॉजिट (13%), शेयर बाजार (6.6%) और क्रिप्टो (1.9%) से काफी आगे है। आर्थिक अनिश्चितता के समय भी सोने पर भरोसा कायम है। 65.7% लोगों ने कहा कि बैंक बचत, म्यूचुअल फंड या इक्विटी की तुलना में सोना उन्हें सबसे सुरक्षित विकल्प लगता है। यह ट्रेंड दर्शाता है कि जेन जी और मिलेनियल्स दोनों के लिए सोना अब भी वित्तीय सुरक्षा का प्रमुख सहारा बना हुआ है।

छोटी खरीदारी बन रही नया ट्रेंड

सर्वे से स्पष्ट संकेत मिलता है कि अब सोने की बड़ी और कम अंतराल वाली खरीदारी से हटकर छोटी और नियमित खरीदारी का रुझान तेजी से बढ़ रहा है। हाल की 61.9% खरीद 5 ग्राम से कम की रही, जिसमें 27.5% लोगों ने 2 ग्राम से कम और 34.4% ने 2 से 5 ग्राम के बीच सोना खरीदा। अब 42% परिवार समय-समय पर छोटी मात्रा में सोना खरीदना पसंद कर रहे हैं, जबकि 58% अभी भी एकमुश्त और अवसर आधारित खरीद करते हैं।

24.3% लोगों ने अपनी पहली सैलरी या व्यक्तिगत आय के बाद पहली बार सोना खरीदा, जबकि 23.9% ने इसे निवेश के रूप में चुना। यह ट्रेंड पीढ़ियों के व्यवहार में अंतर भी दिखाता है। जेन जी छोटे और व्यक्तिगत माइलस्टोन से सोने की खरीद शुरू कर रहे हैं, जबकि मिलेनियल्स इसे जीवन की बड़ी घटनाओं और दीर्घकालिक सुरक्षा से जोड़कर देखते हैं।

जेन जी और मिलेनियल्स की पहली पसंद बना सोना

परिवार की भूमिका भी महत्वपूर्ण

निवेश के मामले में परिवार की भूमिका अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन सोने की खरीद के फैसले अब तेजी से व्यक्तिगत होते जा रहे हैं। सर्वे के मुताबिक 66.7% उत्तरदाताओं ने कहा कि आज सोना खरीदना मुख्य रूप से व्यक्तिगत और स्वयं प्रेरित निर्णय बन चुका है, न कि केवल पारिवारिक प्रभाव से लिया गया फैसला। 42.3% लोगों ने बताया कि उनके घर में हाल की सोने की खरीद की पहल उन्होंने खुद की, जबकि 40% ने माता-पिता या बड़े परिवार के सदस्यों को इसका श्रेय दिया। यह बदलाव पीढ़ियों के बीच स्पष्ट अंतर को दिखाता है। जेन जी अब कब और कैसे सोना खरीदना है, इसका फैसला खुद लेने में अधिक आत्मविश्वास दिखा रहे हैं और इसे व्यक्तिगत वित्तीय निर्णय मानते हैं। वहीं, मिलेनियल्स अब भी गोल्ड को परिवार की योजना और दीर्घकालिक सुरक्षा के नजरिए से देखते हैं, जहां खरीदारी सामूहिक प्राथमिकताओं से प्रभावित रहती है।

अब शादियों तक सीमित नहीं

दिलचस्प बात यह है कि पहली बार सोना खरीदना अब केवल शादी जैसे अवसरों तक सीमित नहीं रहा। 24.3% लोगों ने अपनी पहली सैलरी या व्यक्तिगत आय के बाद पहली बार सोना खरीदा, जबकि 23.9% ने इसे निवेश के रूप में चुना। यह ट्रेंड पीढ़ियों के व्यवहार में अंतर भी दिखाता है। जेन जी छोटे और व्यक्तिगत माइलस्टोन से सोने की खरीद शुरू कर रहे हैं, जबकि मिलेनियल्स इसे जीवन की बड़ी घटनाओं और दीर्घकालिक सुरक्षा से जोड़कर देखते हैं।

सोने की खरीद में डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग बढ़ा है। इसके बावजूद सोने की खरीदारी में अभी भी पारंपरिक चैनल्स पर भरोसा अधिक है। सर्वे के अनुसार, 38.3% लोग सबसे अधिक सोना बड़ी ब्रांडेड ज्वेलरी चेन से खरीदते हैं, जबकि 34.7% उपभोक्ता स्थानीय ज्वैलर पर भरोसा करते हैं। इसके विपरीत, केवल 5.2% लोग ही ऑनलाइन प्लेटफॉर्म या ऐप के जरिए सोना खरीद रहे हैं। खरीद से जुड़ी चिंताओं में शुद्धता और प्रामाणिकता सबसे बड़ी चिंता के रूप में सामने आई, जिसे 49.4% उत्तरदाताओं ने प्रमुख कारण बताया।

खरीद के बाद पछतावा भी बड़ा संकेत

सर्वे की सबसे महत्वपूर्ण बात यह सामने आई कि सोना खरीदने के बाद बड़ी संख्या में युवा उपभोक्ता असमंजस या पछतावा महसूस करते हैं। करीब 67.1% उत्तरदाताओं ने माना कि उन्हें अक्सर या कभी-कभी सोना खरीदने के बाद पछतावा हुआ है। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह खरीदी गई कीमत (38.9%) रही, जबकि 33.5% लोगों ने ज्वैलरी, सिक्के या डिजिटल गोल्ड जैसे फॉर्मेट को लेकर भ्रम को कारण बताया। वहीं 18.8% ने पर्याप्त जानकारी के अभाव को जिम्मेदार ठहराया। यह ट्रेंड दिखाता है कि सोने पर भरोसा मजबूत है, लेकिन खरीद प्रक्रिया को लेकर युवाओं का आत्मविश्वास अभी भी पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है।

भविष्य में सोना खरीदने का इरादा

लोग भविष्य में भी खूब सोना खरीदना चाहते हैं। इस सर्वे में यह भी सामने आया कि भविष्य में सोना खरीदने का इरादा बहुत मजबूत है। 52.7% उत्तरदाता अगले 12 से 24 महीनों में सोना खरीदने के लिए "बहुत संभावना" दिखाते हैं। कुल मिलाकर सोने का स्थान युवा भारतीयों के बीच अब भी अडिग है, हालांकि खरीदारी के तरीके बदल रहे हैं। छोटे निवेश, व्यक्तिगत निर्णय और पारंपरिक खरीदारी चैनल्स में भरोसा दर्शाता है कि सोना का आकर्षण मजबूत है और आने वाले समय में भी यह सुरक्षित निवेश के रूप में रहेगा।

महंगाई के दौर में बच्चों के लिए बनाएं फंड

उच्च शिक्षा के लिए करें मजबूत प्लानिंग

तैयारी
बिजनेस डेस्क

- तेजी से महंगी हो रही पढ़ाई, अभी नहीं संभले तो पड़ेगा भारी
- एसआईपी समेत कई निवेश विकल्पों के बारे में सोचना होगा
- एक संतुलित, बहुआयामी और समयबद्ध रणनीति बनानी होगी

आज के दौर में शिक्षा केवल एक आवश्यकता नहीं, बल्कि भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी बन चुकी है, लेकिन इसके साथ स्कूल और कॉलेज की फीस सामान्य महंगाई दर से कहीं ज्यादा तेजी से बढ़ रही है। इंटरनेशनल बोर्ड, प्रोफेशनल कोर्स, विदेश में पढ़ाई, हॉस्टल और रहने-खाने का खर्च ये सभी मिलकर उच्च शिक्षा को बेहद महंगा बना देते हैं। ऐसे में माता-पिता के लिए यह जरूरी हो गया है कि वे समय रहते अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए व्यवस्थित और दीर्घकालिक वित्तीय योजना बनाएं। अक्सर देखा जाता है कि माता-पिता एक अनुमानित रकम तय कर लेते हैं और हर महीने एसआईपी शुरू कर देते हैं। यह एक अच्छा कदम है, लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल एसआईपी पर निर्भर रहना पर्याप्त है? बदलते आर्थिक हालात और शिक्षा महंगाई को देखते हुए जवाब है नहीं। जरूरत है एक संतुलित, बहुआयामी और समयबद्ध रणनीति की।

जल्दी शुरुआत ही सबसे बड़ा फायदा

उच्च शिक्षा की योजना में समय सबसे महत्वपूर्ण कारक है। यदि बच्चा छोटा है और आप अभी से निवेश शुरू करते हैं, तो कंपाउंडिंग का लाभ कई गुना बढ़ जाता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आप 10–15 साल तक नियमित एसआईपी करते हैं, तो छोटी-छोटी मासिक बचत भी बड़ा फंड बना सकती है। देर से शुरुआत करने पर आपको अधिक रकम निवेश करनी पड़ सकती है, जिससे घरेलू बजट पर दबाव बढ़ सकता है।

एक निवेश विकल्प पर निर्भर न रहें

अक्सर लोग पूरे शिक्षा फंड को इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश कर देते हैं और फीस भरने तक उसे वहीं रखते हैं। लेकिन यदि फीस के समय बाजार में गिरावट आ जाए, तो आपके फंड की वैल्यू घट सकती है। इसलिए जरूरी है कि जैसे-जैसे फीस का समय नजदीक आए, निवेश को सुरक्षित विकल्पों में शिफ्ट किया जाए। उदाहरण के लिए लक्ष्य से 3–4 साल पहले धीरे-धीरे डेट फंड या एफडी में ट्रांसफर करें। अंतिम 1–2 साल में जोखिम बहुत कम कर दें और पैसा लिक्विड या सुरक्षित साधनों में रखें। यह रणनीति आपको बाजार के उतार-चढ़ाव से बचाती है।

शिक्षा महंगाई का सही अनुमान लगाएं

भारत में शिक्षा महंगाई दर सामान्य महंगाई से अधिक, लगभग 8–12% तक मानी जाती है। यदि आज किसी कोर्स की फीस 10 लाख रुपये है, तो 10 साल बाद वही कोर्स 20–25 लाख रुपये तक हो सकता है। इसलिए भविष्य की लागत का अनुमान लगाते समय महंगाई को शामिल करना जरूरी है। केवल वर्तमान फीस देखकर योजना बनाना पर्याप्त नहीं है।

अन्य खर्चों को भी जोड़ें

अक्सर माता-पिता केवल ट्यूशन फीस को ध्यान में रखकर फंड बनाते हैं, जबकि वास्तविक खर्च इससे कहीं अधिक होता है। विशेषकर विदेश में पढ़ाई के मामले में रहने और खाने का खर्च, हेल्थ इंश्योरेंस, यात्रा खर्च, लैपटॉप और अन्य गैजेट्स, एप्लिकेशन फीस, इंटर्नशिप या प्रोजेक्ट खर्च इन सभी खर्चों को जोड़कर ही वास्तविक लक्ष्य तय करें। विदेश में पढ़ाई का खर्च तो डॉलर या अन्य विदेशी मुद्रा में होने के कारण और भी बढ़ सकता है।

एजुकेशन लोन से न घबराएं

कई माता-पिता एजुकेशन लोन को नकारात्मक नजर से देखते हैं, लेकिन यह सोच हमेशा सही नहीं होती। यदि समझदारी से लिया जाए, तो एजुकेशन लोन रिटायरमेंट सेविंग्स को बचाने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास शिक्षा और रिटायरमेंट दोनों के लिए सीमित फंड है, तो शिक्षा के लिए आंशिक लोन लेकर आप अपने रिटायरमेंट कॉर्पस को सुरक्षित रख सकते हैं। इसके अलावा, एजुकेशन लोन पर टैक्स लाभ भी मिलता है और पढ़ाई पूरी होने के बाद बच्चे खुद इसे चुकाने में योगदान दे सकते हैं।

रिटायरमेंट से समझौता न करें

बच्चों की पढ़ाई महत्वपूर्ण है, लेकिन अपनी रिटायरमेंट सुरक्षा को नजरअंदाज करना भविष्य में आर्थिक संकट पैदा कर सकता है। शिक्षा के लिए आप लोन ले सकते हैं, लेकिन रिटायरमेंट के लिए नहीं। इसलिए दोनों लक्ष्यों में संतुलन बनाना जरूरी है।

नियमित समीक्षा करें

हर साल अपनी योजना की समीक्षा करें। यदि आपकी आय बढ़ती है, तो **SIP** की राशि भी बढ़ाएं। अगर लक्ष्य की लागत बदलती है या बच्चे की रुचि अलग दिशा में जाती है, तो योजना में संशोधन करें।

अनुशासन ही सफलता की कुंजी

बढ़ती महंगाई के इस दौर में बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए पहले से तैयारी करना अनिवार्य हो गया है। केवल बचत नहीं, बल्कि स्मार्ट निवेश, जोखिम प्रबंधन और समय पर समीक्षा ही मजबूत शिक्षा फंड का आधार बनते हैं। जल्दी शुरुआत, विविध निवेश, महंगाई का सही अनुमान और जरूरत पड़ने पर एजुकेशन लोन ये सभी कदम मिलकर आपके बच्चे के सपनों को साकार कर सकते हैं।

प्राइवेट नौकरी वाले जान लें अहम टिप्स

आर्थिक रूप से रहेंगे मजबूत

- अपने वेतन का करीब 20 फीसदी शुरू से ही निवेश करें
- अपना बजट बनाएं, लक्ष्य तय करें और गैरजरूरी खर्चों से बचें
- सैलरी 10% बढ़ती है, तो कम से कम 5% अतिरिक्त निवेश करें
- व्यक्तिगत हेल्थ इंश्योरेंस जरूर लें, यह बीमारी में काम आएगा

सुझाव
बिजनेस डेस्क

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी करने वाले लाखों युवाओं के लिए करियर की शुरुआत उत्साह और सपनों से भरी होती है। अच्छी सैलरी, कॉर्पोरेट लाइफस्टाइल और तेजी से बढ़ते अवसर आकर्षित करते हैं, लेकिन इस चमक-दमक के पीछे एक सच्चाई भी है प्राइवेट नौकरी में सरकारी कर्मचारियों जैसी पेंशन, स्थायी सुरक्षा या व्यापक सामाजिक लाभ अक्सर उपलब्ध नहीं होते। ऐसे में यदि वित्तीय योजना मजबूत न हो, तो भविष्य असुरक्षित हो सकता है। करियर की शुरुआत में की गई छोटी वित्तीय गलतियां समय के साथ बड़ी समस्या बन जाती हैं। इसलिए जरूरी है कि शुरुआत से ही सतर्क रहें और कुछ सामान्य लेकिन गंभीर वित्तीय भूलों से बचें।

अनियंत्रित जीवनशैली की शुरुआत

अक्सर युवा नौकरी लगते ही खर्च की आजादी का आनंद लेने लगते हैं। सैलरी आते ही किराया, घूमना-फिरना, गैजेट्स और ऑनलाइन शॉपिंग पर पैसा खर्च हो जाता है। लेकिन यदि आय और खर्च का स्पष्ट बजट न हो, तो बचत पीछे छूट जाती है। वित्तीय स्थिरता की पहली शर्त है बजट बनाना। 50-30-20 फॉर्मूला एक आसान तरीका है। इसमें 50% आय जरूरी खर्चों के लिए, 30% लाइफस्टाइल और शौक के लिए तथा 20% बचत और निवेश के लिए रखा जाता है। समस्या तब होती है जब लोग बचत वाले हिस्से को टाल देते हैं। कई बार दिखावे या सामाजिक दबाव में जरूरत से ज्यादा खर्च कर बैठते हैं। याद रखें, कमाई से ज्यादा जरूरी है पैसे का प्रबंधन।

वेतन बढ़ा, बचत नहीं

प्राइवेट सेक्टर में समय-समय पर इंक्रीमेंट और प्रमोशन मिलते हैं। लेकिन अक्सर देखा गया है कि वेतन बढ़ते ही खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ जाता है। इसे लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन कहते हैं। नई कार, महंगा मोबाइल, ब्रांडेड कपड़े, बार-बार ट्रैवल ये सब बढ़ती आय के साथ जुड़ जाते हैं। नतीजा यह होता है कि बचत की दर स्थिर ही रहती है या घट जाती है। समझदारी यह है कि हर वेतन वृद्धि के साथ निवेश भी बढ़ाया जाए।

निवेश को टालना

अभी तो करियर की शुरुआत है, बाद में निवेश करेंगे यह सोच सबसे खतरनाक है। निवेश में समय सबसे बड़ा हथियार है। जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, उतना ही कंपाउंडिंग का फायदा मिलेगा। मान लीजिए कोई व्यक्ति 25 साल की उम्र से हर महीने 5,000 रुपये एसआईपी में निवेश करता है और दूसरा 35 साल की उम्र से 10,000 रुपये। लंबे समय में पहले व्यक्ति का फंड अधिक हो सकता है, क्योंकि उसे 10 साल का अतिरिक्त समय मिला। प्राइवेट नौकरी में पेंशन की गारंटी नहीं होती। इसलिए रिटायरमेंट फंड बनाना आपकी जिम्मेदारी है। म्यूचुअल फंड एसआईपी, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य लंबी अवधि के साधनों में नियमित निवेश जरूरी है।

इमरजेंसी फंड की अनदेखी

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी की स्थिरता सीमित हो सकती है। अचानक छंटनी, कंपनी बंद होना या व्यक्तिगत कारणों से नौकरी छोड़नी पड़ सकती है। ऐसे समय में यदि इमरजेंसी फंड न हो, तो आपको कर्ज लेना पड़ सकता है या निवेश तोड़ना पड़ सकता है। कम से कम 6 से 9 महीने के खर्च के बराबर राशि रखें।

बीमा को हल्के में लेना

कई लोग सोचते हैं कि कंपनी द्वारा दिया गया ग्रुप हेल्थ इंश्योरेंस पर्याप्त है। लेकिन नौकरी बदलते ही यह सुविधा खत्म हो सकती है। इसलिए व्यक्तिगत हेल्थ इंश्योरेंस लेना जरूरी है। इसके अलावा, यदि परिवार आप पर निर्भर है, तो टर्म लाइफ इंश्योरेंस अनिवार्य है। यह कम प्रीमियम में बड़ी सुरक्षा देता है।

कर्ज का गलत इस्तेमाल

क्रेडिट कार्ड का अत्यधिक उपयोग और पर्सनल लोन लेना भी बड़ी वित्तीय गलती है। 18% से 36% तक ब्याज दर आपकी बचत को खत्म कर सकती है। कर्ज लें तो केवल जरूरी जरूरतों के लिए, जैसे होम लोन।

अनुशासन ही असली सुरक्षा

प्राइवेट नौकरी में अवसर बहुत हैं, लेकिन जोखिम भी कम नहीं। यहां भविष्य की सुरक्षा आपके अपने हाथ में है। बजट बनाना, लाइफस्टाइल पर नियंत्रण, समय पर निवेश, पर्याप्त बीमा और इमरजेंसी फंड ये पांच स्तंभ आपकी आर्थिक मजबूती की नींव हैं। वहीं, आज का अनुशासन आपको आर्थिक स्वतंत्रता और मानसिक शांति दे सकता है।

शेयर बाजार की बदहाली से इक्विटी म्यूचुअल फंड में घटा निवेश

- गोल्ड ईटीएफ में निवेश 106% बढ़ा
- शेयर बाजार में इन दिनों खूब दिख रही उठापटक
- आम निवेशकों का सेंटिमेंट प्रभावित हुआ

जानकारी
बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में इन दिनों उठा-पटक का दौर चल रहा है। किसी दिन शेयर बाजार का सूचकांक कुलांचे भरते हुए ऊपर चढ़ जाता है तो किसी दिन जमीन पर लोटने लगता है। तभी तो इस साल के पहले महीने यानी जनवरी 2026 में इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश थोड़ा कम हुआ। स्थिति यह रही कि इस महीने गोल्ड ईटीएफ में इक्विटी म्यूचुअल फंड के मुकाबले ज्यादा निवेश हुआ।

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स ऑफ इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों के मुताबिक जनवरी महीने के दौरान इक्विटी म्यूचुल फंड्स में 24,028 करोड़ रुपये आए। इससे एक महीने पहले यानी दिसंबर 2025 के दौरान 28,054 करोड़ रुपये आए थे। मतलब कि इस महीने निवेश में 14% की कमी आई है। यदि साल दर साल के आधार पर देखें तो जनवरी 2025 की तुलना में इस साल जनवरी में यह गिरावट 39% रही है। पिछले साल जनवरी के दौरान इस फंड में 39,687 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था।

इक्विटी फंड्स में कौन पहली पसंद

जनवरी के दौरान अलग-अलग तरह के इक्विटी फंडों में, फ्लेक्सीकैप फंड निवेशकों की पहली पसंद बने रहे। इनमें सबसे ज्यादा 7,672 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद मिडकैप फंड में 3,185 करोड़ रुपये और लार्ज एंड मिड-कैप फंड में 3,181 करोड़ रुपये का निवेश आया। स्मॉलकैप फंड में 2,942 करोड़ रुपये आए, लेकिन ईएलएसएस फंड से निवेशकों ने 593 करोड़ रुपये निकाल लिए। अगर पिछले महीने से तुलना करें, तो फोकस्ड फंड में निवेश 47% बढ़ा। दिसंबर 2025 में इनमें 1,056 करोड़ रुपये आए थे, जो जनवरी 2026 में बढ़कर 1,556 करोड़ रुपये हो गए। लार्जकैप फंड और सेक्टोरल/थीमैटिक फंड में भी पिछले महीने की तुलना में क्रमशः 28% और 10% ज्यादा निवेश आया। वहीं, मिड-कैप और स्मॉल-कैप फंड में निवेश पिछले महीने के मुकाबले 24% और 23% घट गया।

डेट फंड का चला जादू

जनवरी 2026 के दौरान डेट फंड में 74,827 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह अच्छी खबर है क्योंकि पिछले दो महीनों (नवंबर और दिसंबर 2025) में डेट फंड से कुल 1.58 लाख करोड़ रुपये बाहर चले गए थे। पिछले साल जनवरी की तुलना में इस साल डेट फंड में निवेश 42% कम रहा, जब 1.28 लाख करोड़ रुपये आए थे। डेट फंड की 16 अलग-अलग श्रेणियों में से, ओवरनाइट फंड में सबसे ज्यादा 46,280 करोड़ रुपये का निवेश आया। वहीं, कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड से 11,472 करोड़ रुपये निकाल लिए गए। लिक्विड फंड में 30,681 करोड़ रुपये और मनी मार्केट फंड में 12,763 करोड़ रुपये का निवेश आया।

हाइब्रिड फंड में भी रौनक

बीते जनवरी महीने के दौरान हाइब्रिड फंड में 17,356 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह दिसंबर 2025 के 10,755 करोड़ रुपये की तुलना में 61% ज्यादा है। पिछले साल जनवरी 2025 की तुलना में यह आंकड़ा 98% बढ़ा है, जब 8,767 करोड़ रुपये का निवेश आया था। हाइब्रिड फंड की छह श्रेणियों में से, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड में सबसे ज्यादा 10,485 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद आर्बिट्रेज फंड में 3,293 करोड़ रुपये आए। आर्बिट्रेज फंड में तो पिछले महीने के मुकाबले निवेश में 2,507% की भारी बढ़ोतरी हुई, जो दिसंबर 2025 में सिर्फ 126 करोड़ रुपये था। हालांकि, इक्विटी सेविंग्स फंड और कंजरवेटिव हाइब्रिड फंड में पिछले महीने के मुकाबले क्रमशः 81% और 35% की गिरावट आई।

ईटीएफ में खूब हुआ निवेश

अन्य स्कीमों, जिनमें ईटीएफ और इंडेक्स फंड जैसे पैसिव फंड शामिल हैं, में जनवरी में 39,954 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह दिसंबर 2025 के 26,723 करोड़ रुपये से 50% ज्यादा है। गोल्ड ईटीएफ में तो सबसे ज्यादा 24,039 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो पिछले महीने के मुकाबले 106% ज्यादा है। हो सकता है कि सोने की कीमतों में तेज बढ़ोतरी की वजह से निवेशक इस ओर आकर्षित हुए। अन्य ईटीएफ में 15,005 करोड़ रुपये का निवेश आया। विदेशों में निवेश करने वाले फंड-ऑफ-फंड में भी भारी उछाल देखा गया।

चालीस की उम्र में कर रहे हैं रिटायरमेंट प्लानिंग तो अपना लें ये अहम टिप्स

इस उम्र में भविष्य की आर्थिक सुरक्षा की असली तैयारी शुरू होती हैं, अच्छी रणनीति बनाकर निवेश करेंगे तो नहीं होगी परेशानी, भविष्य सुरक्षित रहेगा।

शुरुआत
बिजनेस डेस्क

रिटायरमेंट प्लानिंग अक्सर लोग 50 की उम्र के बाद शुरू करने की सोचते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि 40 की उम्र वह मोड़ है, जहां से भविष्य की आर्थिक सुरक्षा की असली तैयारी शुरू होती है। यह उम्र आमतौर पर करियर का सबसे स्थिर और आय का सबसे मजबूत दौर होता है। आमदनी अपने शिखर की ओर बढ़ रही होती है, लेकिन साथ ही जिम्मेदारियां भी बढ़ जाती हैं। बच्चों की पढ़ाई, होम लोन की ईएमआई, माता-पिता की देखभाल और जीवनशैली से जुड़े खर्च। ऐसे में यदि आपने अब तक रिटायरमेंट के बारे में गंभीरता से नहीं सोचा है, तो अब वक्त है इसे प्राथमिकता देने का। 40 की उम्र में रिटायरमेंट प्लानिंग का मतलब है सीमित समय में अधिक प्रभावी रणनीति अपनाना। आपके पास अब 20–25 साल का कार्यकाल बचा हो सकता है। इस दौरान सही निवेश, अनुशासन और जोखिम प्रबंधन से आप एक मजबूत रिटायरमेंट कॉर्पस तैयार कर सकते हैं। सबसे पहले अपनी आय, खर्च, ईएमआई, मौजूदा निवेश और बीमा की स्थिति को स्पष्ट रूप से समझें। हर महीने कितना पैसा बचता है और कितना खर्च होता है, इसका विस्तृत विश्लेषण करें। इसके साथ ही महंगाई दर, भविष्य के मेडिकल खर्च और रिटायरमेंट के बाद की जीवनशैली को ध्यान में रखते हुए यह अनुमान लगाएं कि आपको कितनी रकम की जरूरत होगी। विशेषज्ञ मानते हैं कि रिटायरमेंट के बाद भी वर्तमान खर्च का कम से कम 70–80% हर महीने चाहिए होगा।

सबसे पहले आय, खर्च, ईएमआई व निवेश की स्थिति समझें

रिटायरमेंट को प्राथमिकता बनाएं

अक्सर लोग बच्चों की पढ़ाई या घर खरीदने को प्राथमिकता देते हैं और रिटायरमेंट को टालते रहते हैं। लेकिन याद रखें, बच्चों को शिक्षा के लिए लोन मिल सकता है, रिटायरमेंट के लिए नहीं। ईपीएफ, पीपीएफ, एनपीएस और म्यूचुअल फंड एसआईपी जैसे साधनों में नियमित निवेश बढ़ाएं। कोशिश करें कि अपनी आय का कम से कम 15–25% हिस्सा रिटायरमेंट के लिए सुरक्षित रखें। यदि संभव हो तो हर साल आय बढ़ने के साथ निवेश राशि भी बढ़ाएं।

महंगे कर्ज से जल्दी छुटकारा पाएं

क्रेडिट कार्ड और पर्सनल लोन पर 12% से 24% तक ब्याज देना आपकी संपत्ति निर्माण की क्षमता को कमजोर करता है। ऐसे कर्ज को प्राथमिकता से खत्म करें। होम लोन अपेक्षाकृत सस्ता होता है, लेकिन यदि अतिरिक्त राशि उपलब्ध हो तो प्री-पेमेंट जरूर करें। कर्ज मुक्त जीवन रिटायरमेंट की दिशा में बड़ा कदम है।

इमरजेंसी फंड बनाना न भूलें

रिटायरमेंट निवेश के साथ-साथ एक मजबूत इमरजेंसी फंड होना भी जरूरी है। कम से कम 6 से 9 महीने के खर्च के बराबर राशि सेविंग अकाउंट या लिक्विड फंड में रखें। यह फंड अचानक नौकरी छूटने, बीमारी या किसी अप्रत्याशित खर्च के समय सुरक्षा कवच का काम करेगा। इससे आपको निवेश तोड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

टैक्स प्लानिंग से बढ़ाएं बचत

सही टैक्स प्लानिंग से आप अपनी निवेश क्षमता बढ़ा सकते हैं। आयकर की धारा 80सी, एनपीएस में अतिरिक्त निवेश (80सीसीडी(1बी), हेल्थ इंश्योरेंस (80डी) और कैपिटल गेन प्लानिंग का लाभ उठाएं। टैक्स बचत केवल बचत नहीं है, बल्कि आपके भविष्य के लिए अतिरिक्त निवेश का अवसर है।

पर्याप्त बीमा सुरक्षा सुनिश्चित करें

40 की उम्र में परिवार आप पर निर्भर होता है। इसलिए पर्याप्त टर्म लाइफ इंश्योरेंस जरूर लें, जो कम से कम आपकी वार्षिक आय का 10–15 गुना हो। साथ ही, एक अच्छा हेल्थ इंश्योरेंस प्लान भी रखें, क्योंकि उम्र बढ़ने के साथ मेडिकल खर्च तेजी से बढ़ते हैं। समय-समय पर अपनी पॉलिसी की समीक्षा करना भी जरूरी है। बच्चों की शिक्षा एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है, लेकिन इसे रिटायरमेंट की कीमत पर पूरा करना समझदारी नहीं है। शिक्षा के लिए अलग निवेश योजना बनाएं, जैसे कि इक्विटी म्यूचुअल फंड या चाइल्ड प्लान। ध्यान रखें कि लंबी उम्र एक बड़ा वित्तीय जोखिम है। यदि रिटायरमेंट फंड पर्याप्त नहीं होगा, तो बाद में आर्थिक निर्भरता की स्थिति बन सकती है।

नियमित समीक्षा सफलता की कुंजी

रिटायरमेंट प्लानिंग एक बार का निर्णय नहीं, बल्कि निरंतर प्रक्रिया है। हर साल अपने निवेश, खर्च और लक्ष्यों की समीक्षा करें। यदि आपकी आय बढ़ती है या जिम्मेदारियां कम होती हैं, तो निवेश की गति बढ़ाएं। पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट का संतुलन उम्र के अनुसार रखें। जैसे-जैसे रिटायरमेंट नजदीक आए, जोखिम कम करते जाएं।

स्पष्ट रणनीति अपनाएं

40 की उम्र में रिटायरमेंट प्लानिंग शुरू करना देर नहीं है, बशर्ते आप अनुशासित और स्पष्ट रणनीति अपनाएं। सही दिशा में उठाया गया कदम आपको आर्थिक स्वतंत्रता और सम्मानजनक जीवन दे सकता है। याद रखें, रिटायरमेंट कोई अंत नहीं, बल्कि जीवन का नया अध्याय है और इसकी तैयारी आज से ही शुरू होती है।

खबर संक्षेप

कोटिया में 22 फरवरी को होगा हिंदू सम्मेलन

कनीना। गांव कोटिया में आगामी 22 फरवरी को आयोजित होने वाले हिंदू सम्मेलन को लेकर शनिवार कोक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें ब्लाक स्तरीय इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए विचार-विमर्श किया गया। ग्राम सरपंच एवं सरपंच एसोसिएशन के प्रधान धर्मवीर यादव की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में कार्यक्रम को भव्य बनाने के की जिम्मेवारी बाबा बृजेश्वर धाम कोटिया कमेटी ने ली। उन्होंने बताया कि बाबा बृजेश्वर धाम कोटिया में सुबह सवा 11 बजे बैठक आयोजित की जाएगी। जिसमें समाज के हितों को ऊपर उठाने के लिए मंथन किया जाएगा। क्षेत्र के सभी धार्मिक संगठनों को इसमें शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया है।

सागरपुर ग्रामसभा का कोरम पूरा

मंडी अटेली। पंचायतों में विकास कार्यों में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सरकार द्वारा विशेष ग्रामसभाओं के आयोजन के निर्देश जारी किए गए हैं। इन निर्देशों के अनुसार ग्रामसभा में 40 प्रतिशत, 30 प्रतिशत और 20 प्रतिशत सदस्यों की अनिवार्य उपस्थिति का प्रावधान किया गया है। हालांकि व्यवहारिक स्तर पर यह व्यवस्था कई ग्राम पंचायतों के लिए चुनौती बनती नजर आ रही है। खंड सिहमा की ग्राम पंचायत सागरपुर में भी यही स्थिति देखने को मिली। लगभग 1860 मतदाताओं वाली सागरपुर पंचायत में पहले 40 प्रतिशत और 30 प्रतिशत उपस्थिति का कोरम पूरा नहीं हो सका।

संदीप चेडवाल बने भीम आर्मी के जिला प्रधान

नांगल चौधरी। पंचायत समिति के प्रांगण में स्थित अंबेडकर पार्क में भीम आर्मी की बैठक प्रदेशाध्यक्ष कमल कुमार बराड़ की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें संगठन को मजबूत बनाने पर विचार-विमर्श किया, इसके बाद जिला स्तरीय संगठनात्मक नियुक्तियां की गई है। कार्यक्रम में संतलाल संतलाल अंबेडकर मुख्य रूप से मौजूद रहे हैं। उन्होंने कहा कि समाजिक विकास में अंबेडकर समाज की भूमिका अग्रणी रही है। डॉ भीमराव अंबेडकर के सिद्यांतानुसार गरीब वर्ग को समाज की मुख्यधारा में जोड़कर उन्हें मौलिक अधिकार दिए हैं। बावजूद अंबेडकर समाज को विभिन्न परेशानी झेलनी पड़ रही है। संगठन को मजबूत करने के मकसद से भीम आर्मी का गठन किया गया है।

पुलवामा शहीदों की याद में रक्तदान शिविर

मंडी अटेली। क्षेत्र के गांव नांगल में युवा संगठन द्वारा पुलवामा अटैक में शहीद हुए जवानों की स्मृति में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए 60 यूनिट रक्तदान किया। शिविर का शुभारंभ स्वास्थ्य मंत्री के पीए विकास यादव ने रक्तदाताओं को बैज लगाकर किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि रक्तदान महादान है और जब यह देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर सैनिकों की स्मृति में किया जाता है तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि शहीदों का बलिदान हम कभी नहीं भूल सकते और राष्ट्रसेवा के प्रति सजग रहना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

गोशाला में चार दिवसीय वार्षिक उत्सव आज से

मंडी अटेली। श्री कृष्ण बाल गोपाल गोशाला बिहाली का सातवां वार्षिक उत्सव 15 से 18 फरवरी तक गोशाला प्रांगण बिहाली में धूमधाम से मनाया जाएगा। इस चार दिवसीय आयोजन में क्षेत्र के गोभक्तों और धर्मप्रेमी सज्जनों को परिवार सहित आमंत्रित किया गया है। कार्यक्रम का शुभारंभ 15 फरवरी को प्रात सवा आठ बजे हवन के साथ होगा, जिसके पश्चात राहुल चौधरी, कृष्ण भासला एंड पार्टी भजन प्रस्तुति देंगे। 16 फरवरी को सुभाष सिंह सांगी एंड पार्टी तथा 17 फरवरी को संजय पटेल, कंचन यादव, राजू गोला सहित अन्य कलाकार भजन संध्या में प्रस्तुति देंगे। 18 फरवरी को उपवीर मादी, सुरेंद्र मादी व अन्य कलाकार श्रद्धालुओं का मनोरंजन करेंगे।

एक साल में चार महीने श्रीमद्भागवत कथा और 6 महीने युवा चरित्र निर्माण शिविर लगाने की परंपरा

दौंखेरा के वीर हनुमान मंदिर में भारतीय संस्कृति पर प्रवचन करके सामाजिक अपराधों पर अंकुश लगाने में जुटे महंत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नांगल चौधरी

पहाड़ तलहटी पर बसे दौंखेरा गांव का इतिहास करीब 500 साल पुराना है। गुर्जर बाहुल्य गांव में 36 बिरादरी रहती है, लेकिन आपसी स्नेह होने के कारण ब्लॉक में प्रशंसा का पात्र बना हुआ है। यहां ग्रामीणों का मंदिरों से विशेष लगाव बना हुआ है, जहां होने वाले दैनिक प्रवचनों से ग्रामीणों को भारतीय संस्कृति, संस्कारों का अनुसरण करके सामाजिक अपराधों पर अंकुश लगाने का संदेश मिलता है। वीर हनुमान मंदिर के महंत उदयनारायण दास बीते दशकों से युवाओं में नैतिकता विकसित करने में जुटे हुए हैं। जो कि एक साल में चार महीने श्रीमद भागवद कथा तथा छह महीने युवा चरित्र निर्माण शिविरों में प्रवचन करते हैं।

आपको बता दें कि नांगल चौधरी के दक्षिण में बसे दौंखेरा गांव का प्राचीन दाउखेरा था। आधुनिकता के दौर में गांव का नाम बदलकर दौंखेरा में परिवर्तित हो गया। ग्रामीणों की पूजा-अर्चना में विशेष आस्था होने के कारण विभिन्न देवों से जुड़े मंदिरों का निर्माण हो चुका। अधिकाशं आश्रम में वार्षिक मेला लगाने की परंपरा बनी हुई है, तथा सामाजिक गतिविधियों भी कराई जाती हैं। इसी

नांगल चौधरी। मंदिर में श्रीमदभागवद का प्रवचन करते हुए।

क्रम में वीर हनुमान मंदिर दौंखेरा के महंत उदयनारायणाचार्य ने युवाओं में संस्कृति और संस्कारों के पतन पर चिंता जताते हुए समाधान की रूपरेखा बनाई है। उनका तर्क है कि संस्कार वहीन युवा समाज और राष्ट्र का भला नहीं कर सकता और ना ही परिवार के पालन-पौषण में योगदान दे सकता है। अधिकांश युवा गलत संगत में रहकर संगीन अपराधों की तरफ अग्रसर हो रहे हैं, जिससे समाज की शांति व्यवस्था प्रभावित हुई है। परेशान अभिभावक अपनी ही संतानों को संपत्ति से बेदखल करने लगे हैं। कई बुजुर्गों को जीवन के अंतिम दिन वृद्धा आश्रम में बिताने पड़ते हैं। समाधान के लिए महंत ने एक साल में छह महीने युवा चरित्र निर्माण शिविर लगाने का निर्णय लिया है। वीर हनुमान मंदिर में संचालित शिवरों में युवाओं को महाराणा प्रताप, वीर हकीकत राय, भक्त प्रहलाद, भक्त पूर्णमल, शहीद भगत सिंह, नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जीवनी और रामायण-महाभारत का अध्यन कराते हैं। कहा कि महापुरूषों के सिद्यांतों का अनुसरण करने से समाज को स्वाभिमानी जीवन जीने तथा मर्यादाओं एवं नैतिक सिद्यांतों के अनुसरण की प्रेरणा मिलती है। इसलिए वर्षाकाल सर्दियों में श्रीमदभागवत कथा के लिए विभिन्न गांव व शहरों के लिए शेड्यूल बनाते हैं।

स्टेडियम और व्यायामशाला का प्रस्ताव भेजा

सरपंच ने बताया कि गांव में आंगनबाड़ी, स्कूल, उप स्वास्थ्य केंद्र की सुविधा उपलब्ध है। लेकिन खेल स्टेडियम, व्यायामशाला, पार्क उपलब्ध नहीं है। इसके लिए विभाग को पंचायती प्रस्ताव पारित करके भेज दिया, लेकिन अभी तक बजट नहीं मिला। उन्होंने बताया कि ग्रामीण धार्मिक आस्था से सराबोर हैं तथा आपसी भाईचारे में विश्वास रखते हैं।

युवाओं में सुरक्षा बल में भर्ती होने का जुनून

दौंखेरा के ग्रामीण लीलाराम ने बताया कि गांव के युवाओं का आर्मी, सीआरपीएफ, बीएसएफ तथा अन्य सुरक्षा बल में भर्ती होने का जुनून है। लेकिन उन्होंने स्टेडियम तथा व्यायामशाला की सुविधा नहीं मिली, जिस कारण शारीरिक अभ्यास नहीं कर पाते। उन्होंने बताया कि गांव में 100 से अधिक युवा सेना में सेवारत हैं, इसके अलावा सिविल विभागों में भी सेवारत हैं।

राजकीय कॉलेज स्थित सभागार में हुई सेमिनार, विकास के मुद्दों पर चर्चा

ग्राम सचिव और सरपंच सरकारी योजनाओं की देंगे जानकारी

लोगों को सरकार की योजनाओं की पूरी जानकारी न होने के कारण नहीं मिल पाता लाभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। योजना की जानकारी देती एसडीएम। फोटो : हरिभूमि

एसडीएम कनिका गोयल की अध्यक्षता में शनिवार को राजकीय महाविद्यालय स्थित सभागार में विभिन्न विभागों द्वारा सेमिनार आयोजित किया गया। सेमिनार में शामिल विभागों द्वारा उनके माध्यम से केंद्र व हरियाणा सरकार द्वारा जनहित में चलाई गई योजनाओं व सेवाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। एसडीएम कनिका गोयल ने कहा कि जिला के विभिन्न विभागों के माध्यम से केन्द्र व प्रदेश सरकार द्वारा अनेक जन कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही है। विभागीय योजनाओं को आमजन तक पहुंचाने के लिए शनिवार को स्थानीय राजकीय महाविद्यालय के सभागार में एक सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें ग्राम सचिवों व पंचायत प्रतिनिधियों को योजनाओं बारे विस्तार से जानकारी दी गई, ताकि वो लोग अपने–अपने गांव में ग्रामीणों को भी योजनाओं बारे जागरूक कर सकें। एसडीएम कनिका गोयल ने कहा कि आमतौर पर देखने में आया है कि गांव के लोगों को सरकार की योजनाओं की पूरी जानकारी न होने के कारण जरूरतमंद लोग योजना का लाभ लेने से वंचित रह जाते हैं। इसलिए इस सेमिनार के माध्यम से ग्राम सचिवों व पंचायत प्रतिनिधियों को जागरूक किया गया है ताकि वो ग्रामीणों को भी सरकार की योजनाओं बारे जागरूक कर सकें।

प्रधानमंत्री सृजन योजना को बताया

सेमिनार में सुक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग के राहुल यादव ने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि शिक्षित बेरोजगार युवाओं और पारंपरिक कारीगरों को अपना सूक्ष्म उद्यम शुरू करने के लिए 50 लाख रुपये तक (विनिर्माण) और 20 लाख रुपये (सेवा क्षेत्र) तक के ऋण पर 15-35 प्रतिशत की सब्सिडी प्रदान करती है। योजना का मुख्य उद्देश्य गैर-कृषि क्षेत्र में स्वरोजगार के अवसर पैदा करना है। इस योजना के तहत विनिर्माण क्षेत्र में 50 लाख रुपये तक और सेवा क्षेत्र में 20 लाख रुपये तक लोन दिया जाता है। जिसमें सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में सामान्य वर्ग के लिए 25 प्रतिशत और विशेष श्रेणी महिला आदि के लिए 35 प्रतिशत सब्सिडी भी दी जाती है। शहरी क्षेत्रों में यह 15 से और 25 प्रतिशत होती है। इस दौरान खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी मनोज कुमार, जिला महिला विकास प्राधिकरण के प्रबंधक राजकुमार, सहायक रोजगार अधिकारी जितेंद्र सिंह सहित विभिन्न गांवों से आए सरपंच व ग्राम सचिव उपस्थित रहे।

सब्सिडी के बारे में दी जानकारी

डीएचबीवीएन के एसडीओ सुनील कुमार ने पीएम सूर्य घर योजना के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि योजना में केंद्र सरकार की सब्सिडी के लिए आय की कोई सीमा नहीं है, जबकि राज्य सरकार की अतिरिक्त सब्सिडी के लिए एक लाख 80 हजार रुपये से कम आय एवं वार्षिक बिजली खपत का मानदंड है। उन्होंने बताया कि दो किलोवॉट तक के कनेक्शन पर उपभोक्ता को 60 हजार और तीन किलोवाट या इससे अधिक वाट के कनेक्शन पर 78 हजार रुपये की सब्सिडी का प्रावधान है। योजना का लाभ लेने के लिए आवेदक भारतीय नागरिक होना चाहिए, जिसके पास अपना घर हो और छत की जगह हो, साथ ही एक चालू बिजली कनेक्शन अनिवार्य है। जिसके लिए आवेदन आधिकारिक पोर्टल के माध्यम से किया जा सकता है। इसी प्रकार महिला विकास प्राधिकरण, श्रम विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, समाज कल्याण विभाग, स्वास्थ्य विभाग, रोजगार विभाग व एनआरएलएम विभाग के अधिकारियों द्वारा सेमिनार में अपने अपने विभाग द्वारा संचालित योजनाओं बारे विस्तृत जानकारी दी गई।

संत दुर्बलनाथ की मूर्ति स्थापना पर शोभायात्रा

महेंद्रगढ़। भगवान शिव व पार्वती की वेशभूषा में कलाकार। फोटो : हरिभूमि

- कार्यक्रम में मुख्यातिथि विधायक कंवर सिंह यादव मुख्यातिथि रहे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

संत दुर्बलनाथ सेवा समिति की ओर से शनिवार को संत दुर्बलनाथ महाराज की मूर्ति स्थापना के उपलक्ष्य पर शनिवार को शोभायात्रा निकाली गई। यह शोभायात्रा मौहल्ला खटीकान की चौहान बगीची से शुरू होकर स्टेट हाईव, महराणा प्रताप चौक, देवीलाल पार्क, ऑटो मार्केट, आंबेडकर चौक, बालाजी चौक, शंकर मार्केट, सब्जी मंडी रोड, परशुराम चौक, 11 हट्टा बाजार, मौहल्ला खटीकान, मौहल्ला वाल्मीकि, खटीकान मौहल्ले के बगीची में जाकर समाप्त हुई। शोभायात्रा के दौरान मनमोहक झांकियां प्रस्तुत की गई, जिसमें संत संत दुर्बलनाथ महाराज, भगवान शिव व पार्वती सहित अनेक संत महात्मा की मनमोहक झांकियां प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में मुख्यातिथि विधायक कंवर सिंह यादव मुख्यातिथि रहे। विधायक कंवर सिंह यादव ने संस्था को 11 लाख रुपये देने की घोषणा की।

माफी मांगनी चाहिए

विधायक कंवर सिंह यादव ने कहा कि समाज द्वारा संतों का मानना अनुकरणीय कार्य है। संत दुर्बलनाथ महाराज की समाज की ओर से हर वर्ष शोभात्रा निकाली जाती हैं। संत किसी एक जाति धर्म के न होते हुए, बल्कि की वह सब के होते हैं। सभी को उनके भागीदारी करनी चाहिए। इस दौरान मोहल्ले के लोगों ने विधायक कंवर सिंह यादव के सामने अपनी कुछ मांग भी रखी, जिनकों विधायक ने स्वीकार करते हुए जल्द पूरा करने का आश्वासन दिया। विधायक कंवर सिंह यादव ने शोभायात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम के उपलक्ष्य में मौहल्ले में भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया, शोभायात्रा से पूर्व बगीची में विशाल जागरण का आयोजन भी किया गया, जिसमें संत दुर्बलनाथ महाराज का गुणगान किया गया।

महेंद्रगढ़। शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए। फोटो : हरिभूमि

तुलाराम चौक पर पुलवामा शहीदों को दी श्रद्धांजलि

महेंद्रगढ़। राव तुलाराम चौक पर शनिवार को पुलवामा शहीदों की स्मृति में श्रद्धांजलि कार्यक्रम सैनिक एवं अर्धसैनिक जवानों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जनों ने शहीदों को पुष्प अर्पित कर दो मिनट का मौन रखा। गजराज यादव ने कहा ने कहा कि 31 मार्च 2017 को जिला अर्धसैनिक बोर्ड के गठन को लेकर हरियाणा सरकार ने प्रस्ताव पारित किया गया था और हमारा मंत्रालय और मंत्री भी लगातार हरियाणा सरकार में मौजूद है, लेकिन लगभग नौ वर्ष बीत जाने के बावजूद आज तक बोर्ड का विधिवत गठन नहीं हो पाया है। हर जिले में बड़ी संख्या में सेवारत एवं पूर्व अर्धसैनिक बलों के जवान तथा उनके परिवार निवास करते हैं, जिनके कल्याण और समस्याओं के समाधान के लिए जिला स्तर पर बोर्ड का गठन अत्यंत आवश्यक है और साथ हीं हरियाणा में अर्धसैनिक बलों को भर्ती में आरक्षण के लिए कोटा निर्धारित नही किया गया है जो अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने सरकार से मांग की कि जिला अर्धसैनिक बोर्ड का शीघ्र गठन किया जाए, ताकि शहीद परिवार एवं जवानों को सरकारी योजनाओं का लाभ मिल सके।

स्वास्थ्य मंत्री कार्यालय में पुलवामा हमले के शहीदों को दी श्रद्धांजलि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ मंडी अटेली

मंडी अटेली। पुलवामा हमले के शहीदों की याद में मौन रखते हुए। फोटो : हरिभूमि

स्वास्थ्य मंत्री कार्यालय अटेली में पुलवामा हमले की 7वीं बरसी पर शहीद हुए जवानों को श्रद्धांजलि देकर एक मिनट का मौन धारण किया। स्वास्थ्य मंत्री के कार्यालय में शनिवार का ब्लैक डे के रूप में मनाया गया। इस मौके पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने बताया कि देश के दुश्मनों ने वर्ष 2019 को हुए पुलवामा में सैनिकों के ऊपर कायराना हमला किया था। जिसमें हमारे 40 जवान शहीद हो गए थे। पुलवामा हमले में शहीद वीर जवानों की शहादत को देश सदैव याद रखेगा। वह भारत के इतिहास में काला दिन साबित हुआ था। पुलवामा हमले का धमाका इतना खतरनाक था कि इसकी आवाज कई किलोमीटर तक सुनाई दिया था। पुलवामा हमले के ठीक 12 दिनों के बाद भारत ने पाकिस्तान के बालाकोट में एयर स्ट्राईक किया था। इस हमले में भारत ने पाकिस्तान के सैकड़ों आतंकियों को मार गिराया। मां भारती के वीर सपूतों का अमर बलिदान हमें आतंकवाद के विरुद्ध एकजुट होकर लड़ने की प्रेरणा देता है आज भारत आतंकवाद के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस की नीति के साथ एकजुटता एवं मजबूती से खड़ा है।

माली टीबा में जांगिड़ परिवार ने मनाया कन्या जन्म उत्सव

बेटियां सौभाग्य की प्रतीक, उन्हें संबल बनाने की जरूरत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

प्रगतिशील शिक्षक ट्रस्ट की ओर से बेटी बचाओ अभियान को समर्पित कार्यक्रम 'नंदिनी पर्व' के अंतर्गत माली टीबा में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। आपको बताते चले कि ट्रस्ट द्वारा 'नंदिनी पर्व' के माध्यम से उन परिवारों का सामाजिक सम्मान किया जाता है जो कन्या जन्म पर न केवल खुशियां मनाते हैं अपितु एक पर्व मनाकर समाज को भी बेटी के महत्व का संदेश देते हैं। 'नंदिनी पर्व' का शुभारम्भ ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ संजय शर्मा ने किया। इस कड़ी में मोहल्ला माली टीबा निवासी राजाराम मास्टर एवं सुमन जांगिड़ की पौत्री एवं सोनम जांगिड़ तथा मोहित जांगिड़ की बेटी भव्या के पैदा होने पर उत्सव आयोजित करने पर परिवार को 'नंदिनी पर्व' अभियान में सम्मानित किया। ट्रस्ट की टीम में शामिल सदस्यों ने परिवार द्वारा आयोजित समारोह में स्मृति चिन्ह, प्रसंशा पत्र, तुलसी का पौधा और बेटी के लिए उपहार तथा परिजनों को अंगवस्त्रम भेंट किया।

नारनौल। कन्या जन्मोत्सव मनाने वाले परिवार का सम्मान करते ट्रस्ट पदाधिकारी।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर सम्मानित अतिथि डॉ बृजलाल जांगिड़ ने कहा कि बेटियां सौभाग्य का प्रतीक हैं। बेटी समाज का दोहरा भार उठाती है अतः उसे अधिक संबल और मजबूत बनाने की जिम्मेदारी हमारी बनती है। नवजात कन्या भव्या के ताऊ एवम शिक्षाविद बंसी लाल जांगिड़ ने कहा कि 'बेटी हमारे आँगन का महकता फूल है। हमें यह खयाल रखना चाहिए की यह फूल कभी मुरझाये नहीं। ट्रस्टी नरोत्तम सोनी ने कहा कि इस समारोह के माध्यम से समाज को संदेश देने का प्रयास किया गया है कि बेटियाँ समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। कन्या की दादा रामरतन जांगिड़ एवं राजाराम जांगिड़ ने कहा की बेटी के जन्म से पूर्व ही परिवार ने इसे एक उत्सव के रूप में मनाने का निर्णय ले लिया था। डॉ ममता शर्मा पूजा उनके परिवार में बेटी व बेटा समान महत्व रखते हैं, जो परिवार कन्याओं के जन्म लेने पर परिवार में खुशियां मनाते हैं वास्तव में वो समाज को एक नई दिशा दिखा रहे हैं। ऐसे परिवारों को सम्मानित करते हुए ट्रस्ट गर्व का अनुभव करता है। इस मौके पर ट्रस्ट सदस्यों के अलावा कन्या के मामा जय किशन, जेपी जांगिड़, सतीश जांगिड़ किशनगढ़, रमेश कुमार, दिनेश कुमार, पुष्पेंद्र कुमार, संजीव कुमार, देवेन्द्र प्रधान, राजू काठ मंडी, फूलचंद जांगिड़, भगवत प्रसाद, संजू, संतोष, शाकुंतलम, बब्बू, गौतम, जॉनी, मुक्ता, अंतु, डॉ ममता, पूजा, मनीषा, मिली, प्रीति विकी और अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

राजकीय कॉलेज का शिविर में शानदार प्रदर्शन

महेंद्रगढ़। राजकीय महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने यदुवंशी डिग्री कॉलेज पटीकरा में आयोजित पांच दिवसीय वाईआरसी शिविर में शानदार प्रदर्शन कर महाविद्यालय व जिले का नाम रोशन किया। इस शिविर में राजकीय महाविद्यालय महेंद्रगढ़ के विद्यार्थियों ने डॉ. विकास गुप्ता के नेतृत्व में सक्रिय सहभागिता की। शिविर के दौरान विद्यार्थियों द्वारा सरदार शहर का शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक भ्रमण भी किया गया, जहां उन्होंने स्थानीय ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। इस भ्रमण से विद्यार्थियों में देश की विविधता तथा सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ी।

बुजुर्गों की पेंशन कदापि बंद नहीं होगी: अनूप

नारनौल। एसयूसीआई कम्युनिस्ट ने बुढ़ापा पेंशन पर थोपी गई शर्तों को सदा के लिए खत्म करने के लिए कानून बनाए जाने की मांग सरकार से की है। एसयूसीआई कम्युनिस्ट के राज्य सचिव कॉमरेड राजेंद्र सिंह एवं पार्टी के वरिष्ठ नेता कॉमरेड अनूप सिंह मातनहेल ने एक संयुक्त बयान जारी कर कहा कि सरकार ने नाजायज शर्तें लगाकर बुढ़ापा पेंशन को बंद कर दिया था। इसके खिलाफ प्रदेश में जन आक्रोश बढ़ता जा रहा था और जन आक्रोश के दवाब में ही रोकी गई पेंशन को सरकार ने जारी कर दिया है, लेकिन सरकार यह बताए कि क्या लगाई गई नाजायज शर्तें सदा के लिए खत्म कर दी गई हैं और वैधानिक प्रावधान करें कि भविष्य में ऐसी शर्तें नहीं थोपी जाएंगी। बुजुर्गों का अपमान कदापि नहीं किया जाएगा।

सरस्वती ग्रामीण एवं शिक्षा विकास केंद्र की बैठक

नारनौल। सरस्वती ग्रामीण एवं शिक्षा विकास केंद्र की बैठक शिव कॉलोनी स्थित संस्था कार्यालय में शनिवार को हुई। इसकी अध्यक्षता संस्था प्रधान अनिल सैनी ने की। इस अवसर पर प्रधान ने कहा कि संस्था पिछले 26 वर्षों से निरंतर कार्य कर रही है। संस्था उन सभी जरूरतमंद लोगों तक पहुंच रही है जो भूखे, बेसहारा, बीमार व अन्य जरूरी आवश्यकताें से वंचित हैं। संस्था सेवा कार्यों द्वारा समय समय पर शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसे क्षेत्रों में हर संभव मदद करने का काम कर रही है।

हुड्डा सेक्टर में हिन्दू सम्मेलन में एकजुटता का संदेश

नारनौल। सकल हिन्दू समाज सुभाष बस्ती नारनौल नगर के तत्वावधान में शनिवार हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया गया। आयोजन समिति के अध्यक्ष कंवर सिंह यादव ने बताया कि सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य स्वदेशी सामाजिक व्यवस्था, कुटुंब प्रबोधन, पंथ-समन्वय, केंद्रित पुनर्निर्माण, प्रबुद्ध नागरिक कर्तव्य एवं संस्कार बोध जैसे विषयों पर समाज में जागरूकता एवं एकता को सुदृढ़ करना रहा। चामत्कारी बाला मंदिर के पास आयोजित कार्यक्रम में क्षेत्र से अनेक संत-महात्माओं, सामाजिक व्यक्तित्वों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विभाग सह करवाह सुभाष, कच्चागढ़ आश्रम के महंत हरिनारायण सरकार ने विचार व्यक्त किए।

पॉलिटेक्निक में पांचवें दिन हुई स्वास्थ्य की जांच

नारनौल। बाबा खेतानाथ गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक में आयोजित सात दिवसीय एनएसएस का विशेष शिविर के पांचवें दिन शनिवार को स्वास्थ्य जांच एवं स्वच्छता शिविर, एचआईवी/एड्स जागरूकता व्याख्यान तथा एचआईवी/एड्स जागरूकता पर भाषण प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, स्वच्छता की आदतों का विकास तथा एचआईवी/एड्स जैसी गंभीर बीमारी के प्रति सही जानकारी देना रहा। इस अवसर पर नागरिक अस्पताल के चिकित्सा अधिकारी डॉ. सरजीत सिंह द्वारा स्वास्थ्य जांच एवं स्वच्छता शिविर आयोजित किया गया।

डीजे संचालक उड़ा रहे आदेशों की धज्जियां, लोगों के दिलों पर हमला

विवाह-शादी एवं सामाजिक समारोह में देर रात तक डीजे बजने से बीमार व्यक्तियों सहित पशु-पक्षी प्रभावित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कनीना

विवाह-शादी एवं सामाजिक समारोह में आजकल गांव-शहर तथा मुख्य सड़क मार्गों से कानफोड़ू डीजे का शोर सुनाई दे रहा है, जिससे ध्वनि प्रदूषण बढ़ने के साथ-साथ बीमार व्यक्ति एवं दुधारू पशु तथा पक्षी बेहद प्रभावित हो रहे हैं, विद्यार्थियों की पढ़ाई भी बाधित हो रही है। बता दें कि बीते समय जिला उपायुक्त नारनौल की ओर से डीजे बजाने पर नियंत्रण रखने के आदेश जारी किए थे जो अब धराशाई हो रहे हैं। आयोजक जिला एवं उपमंडल प्रशासन के आदेशों को ठेंगा दिखाते हुए दस बजे बाद भी देर रात्री तक ऊंची आवाज में डीजे बजाते हैं। जिससे नवजात बच्चे-बिमार व्यक्तियों सहित दुधारू जानवरों पर विपरीत प्रभाव पड रहा है। उनकी धड़कन बढने से नई बीमारी पनपने का अंदेशा है। दुधारू पशु समय पर दूध नहीं दुहने दे रहे हैं। परीक्षाओं का समय सिर पर होने के चलते विद्यार्थियों की पढ़ाई भी चौपट हो रही है। आवाज सुनने के मानक डेसीबल-एम्लीट्यूड को दरकिनार कर मनमर्जी आवाज में डीजे बजाए जाते हैं। सडक पर आते-जाते ऊंची आवाज में बजने वाले डीजे से सड़क हादसे घटित होने की आशंका भी रहती है। पिछले कुछ समय से विवाह समारोह, कुआं पूजन, धार्मिक यात्रा आदि के समय डीजे का प्रचलन बढ़ा है। जो स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाल रहा है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के मुताबिक एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए 50 डेसीबल तक ध्वनि सुनने लायक होती है। लेकिन कई स्पीकर वाले डीजे की तीव्रता 500 डेसिबल से अधिक होती है। जिसे सुनकर आमजन की रूह कांप उठती है। उनकी राय के मुताबिक दिन के समय 25-30 डेसीबल तथा रात्रि के समय 20-25 डेसीबल तक ध्वनि होनी चाहिए। जिला प्रशासन की ओर से रात्रि 10 बजे बाद डीजे बजाने पर पाबंदी है लेकिन आयोजन पक्ष की ओर से रातभर डीजे बजाया जाता है।

क्या कहते हैं चिकित्सक

कनीना उप नागरिक अस्पताल के चिकित्सक डॉ. सुंदर लाल ने बताया कि एम्प्लीट्यूड, आवाज तरंग के रूप में चलती रहती है। आवाज की तंरग की स्पीड जितनी हैवी होगी उतना ही नुकसानदायक मानी जाती है। साऊंड बढ़ने से एम्लीट्यूड बढ जाता है। कान के सुनने की क्षमता से अधिक आवाज साऊंड पोल्युशन को जन्म देती है। घर में बजने वाला साऊंड-टीवी आदि 10 डीबी तक होती है। सड़क किनारे ये आवाज 80-100 डेसीबल तक पहुंच जाती है। सार्वजनिक सभाओं,जलसों व यात्राओं में 50 डेसीबल से अधिक आवाज में डीजे नहीं चलाया जाना चाहिए। नियमों का उल्लंघन करने वाले डीजे संचालकों के खिलाफ सजा एवं जुर्माने का भी प्रावधान है।

क्या कहते हैं डीएसपी

डीएसपी दिनेश कुमार ने बताया कि बिना अनुमति तथा ऊंची आवाज में बजने वाले डीजे पर नजर रखी जा रही है। सभी थाना अध्यक्ष अपने-अपने क्षेत्र में डीजे की आवाज पर नजर रख रहे हैं। ऐसा पाए जाने पर उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। विवाह समारोह सहित गांव एवं शहर में रात्री 10 बजे बाद डीजे बजाने की पाबंदी है। आदेशों का उल्लंघन करने वाले डीजे संचालकों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

क्या कहते हैं एसडीएम

एसडीएम डा. जितेंद्र सिंह अहलावत ने कहा कि डीजे बजाने के लिए अनुमति लेना जरूरी है। अनुमति मिलने के बाद रात 10 बजे तक धीमी आवाज में डीजे बजा सकते हैं। बिना अनुमति के बजाए जाने वाले डीजे का चालान एवं जब्त किया जाएगा।

खबर संक्षेप

महाशिवरात्रि पर्व पर बागोत में मेला आज

कनीना। महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में कनीना-दादरी मार्ग स्थित गांव बागोत में रविवार 15 फरवरी को मेले का आयोजन किया जाएगा। इस मेले की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। बता दें कि इस मेले में भारी संख्या में शिवभक्त पहुंचते हैं जो प्राकृतिक स्वयंभू शिवलिंग पर जलाभिषेक करते हैं। मेले में सुरक्षा की दृष्टि से सीसीटीवी कैमरे तथा रेलिंग लगाने का कार्य पूरा कर लिया गया है। पुलिस प्रशासन तथा मठाधीश की ओर से बंदोबस्त किए गए हैं। शिव मंदिर के मठाधीश महंत रोशनपुरी ने बताया कि इस मेले में दूर-दराज से हजारों शिवभक्त हिस्सा लेते हैं। जिनकी सुरक्षा के लिए उनके तथा प्रशासन की ओर से बंदोबस्त किए जाते हैं। मेले के दृष्टिगत हरिद्वार से शिव भक्तों द्वारा लाई गई कांवड़ अर्पित की जाएंगी। उन्होंने बताया कि मंदिर में शिव भक्तों के हर-हर महादेव के जयकारे गुंजायमान होने लगे है। दूसरी ओर महाशिवरात्रि के मौके पर सत्यनारायण मंदिर गुढा, शिव मंदिर उन्हाणी, शिव मंदिर कनीना, धनौंदा सहित विभिन्न मंदिरों में शिव भक्तों द्वारा जलाभिषेक किया जाएगा।

पीजी कॉलेज में आगाज -ए -बसंत का समापन, विज्ञान की देवी सरस्वती की पूजा

बेस्ट नायिका सवयंवी और बेस्ट नायक का खिताब अमन ने जीता

ज्ञान, संगीत, कला और कला का संगम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

राजकीय महाविद्यालय में दो दिवसीय आगाज़-ए-बसंत उत्सव का समापन शनिवार को हो गया। इसकी अध्यक्षता प्राचार्य प्रोफेसर राजवीर सिंह ने की। समारोह में मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त जिला उच्चतर शिक्षा अधिकारी प्रोफेसर डॉ पूर्ण प्रभा रहीं। विशिष्ट अतिथि दुर्गा शक्ति प्रभारी इंस्पेक्टर मिनाक्षी शर्मा और एसएचओ विमला देवी रही। अतिथियों के कॉलेज में पहुंचने पर प्राचार्य और उप प्राचार्य डॉ हवा सिंह और सिनियर काउंसिल मैंबर ने पुष्प गुच्छ से स्वागत किया। मुख्य अतिथि प्रोफेसर डॉ पूर्ण प्रभा ने विधार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि बसंत पंचमी भारत में हर साल बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाने वाला त्योहार है। यह त्योहार वसंत ऋतु के आरंभ का प्रतीक है और ज्ञान, संगीत, कला और विज्ञान की देवी सरस्वती को समर्पित है। सरस्वती मां ज्ञान और बुद्धि का आशीर्वाद देती हैं, इसलिए यह विद्यार्थियों, विद्वानों और बुद्धिजीवियों के लिए प्रार्थना करने और सफल शैक्षणिक और व्यावसायिक जीवन के लिए आशीर्वाद प्राप्त करने का एक शुभ अवसर है। प्राचार्य प्रोफेसर राजवीर सिंह ने विद्यार्थियों को बताया कि शैक्षणिक गतिविधियों के साथ सांस्कृतिक और खेल कूद की गतिविधियों में हिस्सा में बढ़कर हिस्सा लेना चाहिए, जिससे उनका सर्वांगीण विकास होता है। उन्होंने ने कहा कि बसंत उत्सव भारत के विभिन्न हिस्सों में अनूठी परंपराओं को जिवंत करने और भारतीय संस्कृति व रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रभारी मीना और प्रियंका शर्मा ने स्टेज संचालन किया।

नारनौल। कार्यक्रम में प्रस्तुति देती छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

डांस प्रतियोगिता में दिखा उत्साह

कार्यक्रम की प्रभारी मीना ने बताया कि आगाज़ ए बसंत उत्सव कार्यक्रम में विजुअल आर्ट की विधाओं को डॉ प्रियंका शर्मा और डॉ वैनिका शर्मा के दिशा-निर्देशों में पोस्टर मेकिंग, पेंटिंग मेकिंग रंगोली जबकि प्रोफेसर डॉ नरेश कुमार यादव डॉ मंजू रानी, डॉ पारुल यादव के सानिध्य में परफॉर्मिंग आर्ट विधाओं में एकल डांस, गीत मिमिकरी, स्किट आदि का विधार्थियों द्वारा अपनी प्रस्तुतियों दी। कॉलेज प्रेस प्रवक्ता प्रोफेसर डॉ चंद्रमोहन ने बताया कि दो दिन के इस बसंत उत्सव में पूरे कॉलेज परिसर में बसंती रंगों व लोक-संस्कृति की छटा देखने को मिली। सभी इस दो दिवसीय आगाज़-ए-बसंत उत्सव के सभी प्रतिभागियों में बेस्ट नायिका सवयंवीं कुमारी और बेस्ट नायक अमन कुमार रहा। विजेताओं को मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथियों और महाविद्यालय की सिनियर काउंसिल मैंबर के करकमलों से पारितोषिक और सर्टिफिकेट से सम्मानित किया।

खबर संक्षेप

विद्या भारती स्कूल ने मनाया महाशिव रात्रि वर्ष

नारनौल। विद्या भारती पब्लिक स्कूल निजामपुर में शनिवार को महाशिवरात्रि पर्व मनाया गया। इसका शुभारंभ भगवान शिव की विधिवत पूजा एवं आरती से हुआ। इस अवसर पर संस्था के चेयरमैन एडवोकेट राजकुमार यादव एवं वाइस चेयरपर्सन डा. उषा यादव ने शिवजी की आरती कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में संस्था प्रबंध निदेशक एडवोकेट पीयूष यादव व निदेशक डा. रविन्द्रा यादव ने बच्चों को प्रसाद वितरण किया। विद्यालय की किड्स ब्लाक की इंचार्ज विजय सोनी ने विद्यार्थियों को महाशिवरात्रि के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने समझाया कि यह पर्व भगवान शिव और माता पार्वती के विवाह के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

आकाश एकेडमी के विद्यार्थियों ने परीक्षा में लिया हिस्सा

महेंद्रगढ़। आकाश एकेडमी के होनहार विद्यार्थियों ने नेशनल फाउंडेशन ओलंपियाड की परीक्षा में शामिल होकर खुशी का इजहार किया है। नेशनल ओलंपियाड का मुख्य उद्देश्य देश के कोने-कोने में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को एक ऐसा सशक्त और विश्वसनीय मंच प्रदान करना है, जहां वे केवल अपने विद्यालय तक सीमित रहकर नहीं, बल्कि देशभर के विद्यार्थियों के बीच अपनी वास्तविक स्थिति को समझ सकें। यह मंच विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में स्वयं को परखने, अपनी क्षमताओं को पहचानने और आने वाली शैक्षणिक एवं व्यावसायिक चुनौतियों के लिए आत्मविश्वास के साथ तैयार होने का अवसर प्रदान करता है। लेवल एक की परीक्षा प्रक्रिया के समापन के बाद परिणाम घोषित किया, जिसमें आकाश एकेडमी के 11 छात्रों ने सफलता प्राप्त की थी।

दा वेदांता स्कूल में स्कॉलरशिप टेस्ट आयोजित

नारनौल। दा वेदांता इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को आयोजित स्कॉलरशिप टेस्ट एवं अभिभावक काउंसलिंग सत्र संपन्न हो गया। इस शैक्षिक आयोजन में विद्यालय के मौजूदा विद्यार्थियों ने भाग लिया। स्कॉलरशिप टेस्ट का उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रतिभा को पहचानना तथा उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना रहा। स्कॉलरशिप टेस्ट के पश्चात विद्यालय परिसर में अभिभावक काउंसलिंग सत्र का आयोजन किया गया, जिसका विषय "डिजिटल युग में पेरेंटिंग की चुनौतियां" रहा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में आरबीएस कॉलेज ऑफ एजुकेशन रेवाड़ी की प्राचार्या डॉ. कुसुम यादवउपस्थित रही।

इंडस स्कूल में खेलकूद प्रतियोगिता का समापन

महेंद्रगढ़। इंडस वैली पब्लिक स्कूल दौंगड़ा अहीर में आयोजित दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का समापन हो गया हैं। कार्यक्रम में दूसरे दिन के मुख्यातिथि राजकीय स्कूल के सेवानिवृत्त प्राचार्य वीरेंद्र सिंह रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वागत गीत से हुआ, जिसमें विद्यालय की छात्राओं ने मनमोहक प्रस्तुति देकर सभी अभिभावकों और अतिथियों का स्वागत किया। खेलकूद प्रतियोगिता में विभिन्न रोमांचक प्रतियोगिता आयोजित की गईं। सबसे पहले 400 मीटर लड़कों की दौड़ तथा 200 मीटर लड़कियों की दौड़ हुई, जिसमें प्रतिभागियों ने शानदार प्रदर्शन किया। इसके अलावा कबड्डी, वॉलीबॉल मैच, रस्साकसी प्रतियोगिता तथा शिक्षकों की विशेष रस्साकसी प्रतियोगिता भी आकर्षण का केंद्र रही। सभी प्रतिभागियों ने खेल भावना का परिचय देते हुए उत्साहपूर्वक भाग लिया। मुख्यातिथि वीरेंद्र सिंह ने कहा कि खेल शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने विद्यालय प्रबंधन और स्टाफ की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन बच्चों में आत्मविश्वास, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता का विकास करते हैं। कार्यक्रम के अंत में विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। संस्था चेयरमैन धर्मेंद्र यादव ने मुख्यातिथि, डीपीई स्टाफ, सभी शिक्षकों एवं अभिभावकों का आभार व्यक्त किया।

युवाओं में संस्कारों का समावेश करना जरूरी

नांगल चौधरी। सरस्वती पब्लिक स्कूल भोजावास में फेयरवेल समारोह प्राचार्य राजेश कुमार की अध्यक्षता में आयोजित हुई। जिसमें संस्था के चेयरमैन दयाराम यादव तथा प्रबंधक निदेशक अमित यादव मुख्य रूप से मौजूद रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता और उत्तम संस्कारों के समावेश के लिए प्रेरित किया। इस दौरान विद्यार्थियों ने नशाखोरी के दुष्प्रभावों पर आधारित नाटक व भाषण प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने कहा कि किताबों में सामाजिक अनुभव का समावेश नहीं होता, इसलिए युवाओं को समाजिक गतिविधियों में रूझान बढ़ाना अनिवार्य है। लेकिन बीते 15-20 सालों से पश्चिमी देशों की संस्कृति का प्रभाव बढ़ने से समाज में अपराधिक गतिविधियों का ग्राफ बढ़ गया। युवाओं में अश्लीलता बढ़ने से सामाजिक ताना-बाना खराब होने का खतरा बढ़ गया है। समाधान के लिए शिक्षण संस्थाओं को किताबी पढ़ाई के साथ भारतीय संस्कृति और सौम्य संस्कारों के अध्यापन को प्राथमिकता देनी होगी।

कनीना। कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

आरपीएस स्कूल में वार्षिक उत्सव

कनीना। आरपीएस इंटरनेशनल स्कूल भड़फ में वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य छात्रों को भविष्य के स्वर्णिम युग की ओर अग्रसर करना था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में आरपीएस समूह के विद्यालय की अध्यक्ष डॉ. पवित्रा राव व विशेष अतिथि के रूप में मुकेश राव उपस्थित थे। आरपीएस समूह के विद्यालय सीईओ मनीष राव और डिप्टी सीईओ कुणाल राव भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में छात्रों ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों ने अपने अभिभावकों और अतिथियों के लिए एक विशेष प्रस्तुति भी दी। कार्यक्रम का समापन सभी के लिए एक यादगार अनुभव रहा। डॉ. पवित्रा राव ने कहा कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण का भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। उन्होंने कहा कि आरपीएस समूह के विद्यालयों में छात्रों को शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों और संस्कृति के बारे में भी सिखाया जाता है। उन्होंने आगे कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सर्टिफिकेट प्राप्त करना नहीं है, बल्कि यह छात्रों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है। प्रधानाचार्या ज्योति भट्ट ने कहा कि यह आयोजन छात्रों के लिए एक अद्वितीय अनुभव था और हमें अपने छात्रों की प्रतिभा को निखारने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए प्रेरित करता है। पर विद्यालय के शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के शिक्षकों द्वारा किया गया और सभी ने मिलकर इस अवसर को यादगार बनाया।

परीक्षा परिणाम में सूरज कॉलेज का शानदार प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

इंदिरा गांधी यूनिवर्सिटी मीरपुर रेवाड़ी द्वारा बीएससी ऑनर्स फिजिक्स के पांचवें सेमेस्टर का परिणाम घोषित किया गया, जिसमें सूरज कॉलेज के विद्यार्थियों का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। छात्रा मनीषा यादव पुत्री कृष्ण कुमार ने 79.56 प्रतिशत अंक के साथ यूनिवर्सिटी की टॉप-10 मेरिट लिस्ट में सातवें एवं कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी कोर्स की छात्रा नेहा पुत्री चेतन प्रकाश ने 78.67 प्रतिशत अंक के साथ यूनिवर्सिटी की टॉप-10 मेरिट लिस्ट में आंठवा एवं कॉलेज में दूसरा स्थान प्राप्त किया। इसी कड़ी में बीएससी ऑनर्स केमस्ट्री के पांचवें सेमेस्टर की छात्रा प्रिया पुत्री अजीत सिंह ने 83.33 प्रतिशत अंक के साथ कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं कॉलेज के अधिकांश विद्यार्थी प्रथम श्रेणी के साथ उत्तीर्ण होने में सफल रहे। कॉलेज प्राचार्य डॉ. सुधाकर गुप्ता ने बताया कि कॉलेज का श्रेष्ठ प रि णा म विद्यार्थियों के कठोर परिश्रम व शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है। उन्होंने बताया कि कॉलेज के विद्यार्थी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। इस अवसर पर कॉलेज निदेशक संदीप प्रसाद ने भी परिणाम पर खुशी जाहिर की।

नेहा।

मनीषा।

प्रिया।

नारनौल। विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

विदाई समारोह में छात्र सम्मानित

नारनौल। शहर के मौहल्ला चैधरीयान स्थित हरियाणा सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में शनिवार बारहवीं कक्षा का विदाई समारोह आयोजन किया गया। इस दौरान कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थियों ने बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों को विदाई दी। समारोह का शुभारम्भ संस्था चेयरमैन हितेन्द्र शेखर शर्मा व निदेशिका संगीता शर्मा ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। मंच संचालन जूनियर विद्यार्थियों ने किया। ग्यारहवीं कक्षा के छात्रों ने बारहवीं कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी को उनकी खूबियों के अनुसार टाइटल देते हुए उपहार भेंट किए। बारहवीं कक्षा के छात्रों में से विज्ञान संकाय से वंशिका और हेमन्त, वाणिज्य संकाय से करूणा और हर्ष सैनी, कला संकाय से जीया एवं योगेश मिस्टर और मिस फेयरवेल चुना गया। विद्यालय चेयरमैन हितेन्द्र शर्मा व निदेशिका संगीता शर्मा ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन हर एक के लिए अहम पड़ाव होता है। विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ समाज, राष्ट्र व अन्य गतिविधियों की जानकारी मिलती है। अध्यापक अपने बच्चों को अच्छे संस्कार एवं अच्छी शिक्षा देकर विदा करते है ताकि बच्चें भविष्य में योग्य बनकर राष्ट्र का विकास कर सके। किसी भी छात्र के लिए अपने स्कूल से विदा होने का क्षण अत्यंत भावुक होता है, लेकिन विद्यार्थी कभी भी अपने गुरू के मन से विदा नही होते। विद्यार्थियों को समय का सद्दुपयोग करते हुए अपने भविष्य का लक्ष्य निर्धारित कर उसके अनुसार परिश्रम करें।

कार्यक्रम डीएलएसए की ओर से विश्व रेडियो दिवस पर कार्यक्रम

बापड़ोली में खुला पहला सामुदायिक केंद्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

गांव के लोग अपने आपसी विवादों को बिना कोर्ट-कचहरी जाए, बातचीत और आपसी सहमति से सुलझा सकें इसी उद्देश्य को लेकर अब सामुदायिक मध्यस्थता केंद्र खोले जाएंगे। ट्रायल के तौर पर जिला में पहला मध्यस्थता केंद्र गांव बापड़ोली में खोला गया है। यह जानकारी जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी नीलम कुमारी ने विश्व रेडियो दिवस के अवसर पर एडीआर सेंटर में जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण नारनौल की ओर से सामुदायिक रेडियो अरावली केंद्र के सहयोग से आयोजित एक विशेष कार्यक्रम के दौरान पत्रकारों से बातचीत करते हुए दी। मीडिया के सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि यह पहला मध्यस्थता केंद्र ट्रायल के तौर पर खोला गया है। धीरे धीरे जिला के अन्य गांवों में भी इसकी शुरूआत की जाएगी। इस केंद्र को खोलने के पीछे थाना व कोर्ट की बजाय आपसी भाईचारा कायम कर आपसी सहमति से समझौता करवाना है। मकसद साफ है कि इससे गांवों में भाईचारा बढ़ेगा और लोग सकारात्मक सोच के साथ परिवार व क्षेत्र को विकास की राह पर आगे बढ़ाने पर जोर देंगे। उन्होंने कहा कि ये पहल न्याय आपके द्वार/" की अवधारणा पर आधारित है, ताकि छोटे-मोटे झगड़े कानूनी पेचीदगियों में न फंसें। उन्होंने बताया कि यहां कोई जज नहीं होते, बल्कि प्रशिक्षित निष्पक्ष व्यक्ति (जैसे रिटायर्ड शिक्षक, वकील या समाज के सम्मानित व्यक्ति) होते हैं। इनका काम फैसला सुनाना नहीं, बल्कि दोनों पक्षों के बीच बातचीत का रास्ता खोलना है।

नारनौल। रेडियो अरावली की ओर से सीजेएम नीलम कुमारी को सम्मानित करते हुए।

आईजीयू परीक्षा में यदुवंशी डिग्री कॉलेज ने लहराया परचम

महेंद्रगढ़। हाल ही में इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर के द्वारा जीव विज्ञान विभाग के पांचवे सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। हर बार की तरह इस बार भी यदुवंशी डिग्री कॉलेज के विद्यार्थियों ने बहुत ही बेहतरीन परिणाम दिया। कॉलेज की छात्रा निशा पुत्री सत्यपाल सिंह ने विश्वविद्यालय में दूसरा स्थान हासिल किया। वहीं अनामिका पुत्री विक्रम सिंह ने छठा स्थान और इसी कड़ी में अंतिमा पुत्री जसवंत सिंह ने आठवां स्थान हासिल किया। इसके अतिरिक्त अन्य विद्यार्थियों का परिणाम भी बहुत ही सराहनीय रहा। डॉ. प्रदीप यादव ने बताया कि परीक्षा परिणाम केवल अंकों का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह आपकी मेहनत, अनुशासन, धैर्य और निरंतर प्रयासों का प्रतिफल है। यदुवंशी ग्रुप चेयरमैन व पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने सभी विद्यार्थियों को उनकी सफलता के लिए बधाई दी।

सरकार विकास को दे रही प्राथमिकता: विधायक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

विधानसभा क्षेत्र के राजावास, जेरपुर, ऊष्मापुर एवं डिगरोता गांव में सिंचाई विभाग द्वारा लगभग 17 करोड़ रुपये की लागत से विकास कार्यों के टेंडर लग गए हैं। विधायक कंवर सिंह यादव ने बताया कि यह परियोजना किसानों के हित में एक बड़ा और दूरदर्शी कदम है। टेंडर लगने से नहरों व जल संरचनाओं का व्यापक सुधार होगा, जिससे खेतों तक समय पर पानी पहुंचेगा और कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी। इस परियोजना के अंतर्गत पांच जोहड़ों को आपस में कनेक्ट किया जाएगा, जिससे भू-जल स्तर में सुधार होगा, वर्षा जल का बेहतर संचयन संभव होगा और आने वाले समय में जल संकट से राहत मिलेगी। साथ ही पाइप लाइन का कार्य भी कराया जाएगा। इससे जल संरक्षण को मजबूती मिलेगी, पानी की बर्बादी रुकेगी और प्रत्येक गांव तक समान रूप से पानी की उपलब्धता सुनिश्चित होगी। इस योजना से अधिक से अधिक गांवों को सीधा लाभ मिलेगा। किसानों की सिंचाई संबंधी समस्याएं कम होंगी और ग्रामीण क्षेत्रों में जल प्रबंधन का एक स्थायी समाधान विकसित होगा।

हिंदुस्तान स्कूल सलीमपुर में छात्रवृत्ति परीक्षा में दिखाई प्रतिभा

मंडी अटेली। हिंदुस्तान पब्लिक स्कूल सलीमपुर में छात्रवृत्ति परीक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें पहली से बारहवीं कक्षा तक के विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने भाग लिया। इस परीक्षा का उद्देश्य बच्चों की प्रतिभा का आंकलन करना और उन्नत विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप देना है। निदेशक राकेश कुमार ने कहा कि विद्यालय का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा प्रदान करना है और उन्हें समाज के जिम्मेदार नागरिक बनाना है। परीक्षा में भाग लेने वाले सभी बच्चों को रिफ्रेशमेंट दिया गया। प्राचार्य अनूप कुमार ने अभिभावकों का आभार जताया और कहा कि वे उनके विश्वास पर खरा उतरने का पूर्ण प्रयास करेंगे और शिक्षा के स्तर को नए आयाम तक ले जाएंगे।

तेज रफ्तार से थका मन चाहे सुकून भरी स्लो लाइफ

पिछली एक सदी में तकनीकी विकास में क्रांति के साथ ही लोगों की जीवनशैली भी बहुत तेज रफ्तार वाली हो गई थी। लेकिन कोविड के बाद से लोगों की सोच बदलने लगी और जल्दी से सब कुछ पा लेने के बजाय जीवन में सुकून को तरजीह देने लगे हैं। यही वजह है कि पूरी दुनिया में अब लोग तेज रफ्तार से ऊबकर स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं।

कवर स्टोरी

लोकमित्र गौतम

पूरी दुनिया में स्लो लाइफ या धीमे जीवन की ओर बढ़ने को आलस्य की निशानी नहीं बल्कि नई चेतना का पर्याय माना जा रहा है। वास्तव में स्लो लाइफ का मतलब काम को अधूरा छोड़ देना नहीं है। जीवनशैली से समझौता नहीं है और न ही स्लो लाइफ का मतलब घर में पड़े रहना है बल्कि स्लो लाइफ का मतलब है कम लेकिन अर्थपूर्ण काम करना। स्लो लाइफ का मतलब है डिजिटल डिवाइसेस से घिरे न रहना। बीच-बीच में पूरी तरह से डिजिटल डिटॉक्स होना। स्लो लाइफ का मतलब है स्थानीय जीवन का आनंद लेना और पारिवारिक जीवनशैली का लुत्फ उठाना। स्लो लाइफ का मतलब है, अपने पीढ़ियों पुराने व्यंजनों का आनंद लेना और प्रकृति से भरपूर जुड़ाव रखना। स्लो लाइफ का मतलब है रिश्तों की गुणवत्ता बढ़ाना, न कि उनकी संख्या बढ़ाना। और स्लो लाइफ का एक अंतिम मतलब है हर पल उपलब्ध होने की मजबूरी से मुक्त होना।

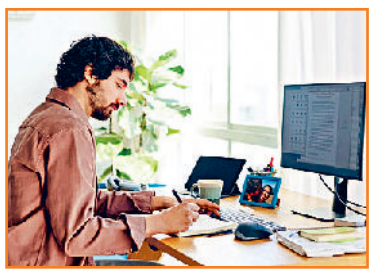

एक समय तक 'तेज रफ्तार' होना, रोमांच का सबब माना जाता था, कामयाबी की निशानी थी। इसलिए अधिकांश लोग तेज-तेज और तेज की तरफ पिछली लगभग एक सदी से दौड़ते रहे हैं। इस भागम-भाग में वाकई इंसान ने अपनी जिंदगी की रफ्तार बहुत तेज कर ली। फास्ट इंटरनेट, बुलेट ट्रेन, आवाज की गति से उड़ते हवाई जहाज, इंस्टेंट अपडेट और कुछ महीने या साल में ही करियर की बुलंदी छूना, ये सब इसी तेज रफ्तार के उदाहरण हैं। लेकिन बीते कुछ समय से अब अधिकतर इंसान इस तेज रफ्तार जिंदगी को रोमांच की बजाय आफत का सबब मानने लगे हैं। यही कारण है कि अब दुनिया, तेज रफ्तारी से रोमांचित नहीं है बल्कि स्लो लाइफ की तरकीबें खोज रही है। अमेरिका से लेकर अफ्रीका तक आज स्लो लाइफ न्यू लाइफस्टाइल बन रही है, क्योंकि लोग मशीन बनने से थक चुके हैं, अब वे थोड़ा ठहरकर जीना चाहते हैं।

क्यों लौट रहे हैं धीमे की ओर: पूरी दुनिया में लोग स्लो लाइफ की तरफ लौट रहे हैं, तो इसकी वजह है कि पिछले कई दशकों के भागम-भाग के कारण परिवार की संरचना कमजोर होती जा रही है। फोन आपको किसी क्षण बेफिक्र नहीं होने देता, फुर्सत में नहीं रहने देता। नए-नए रेडीमेड पकवानों की कुछ मिनटों में सप्लाई ऐसे होने लगी है कि लोग अपने स्वाद का स्थाई सुख ही भूल गए हैं। नींद अब दुनिया की सबसे बड़ी नियामत बन चुकी है और सबसे बड़ी बात यह है कि इंसान खुद को ही भूलने लगा है। यही वजह है कि अब अमेरिका हो या एशिया, अफ्रीका और यूरोपीय देश के लोग परिवार के साथ समय बिताना चाहते हैं। कुछ घंटे या हफ्ते में एक दिन कम से कम बिना फोन के रहना चाहते हैं। कभी आराम से धीरे-धीरे पकाकर अपनी मनपसंद डिश खाना चाहते हैं और चाहते हैं कि कम से कम हफ्ते का एक दिन तो ऐसा हो, जब सोकर जगने का टाइमर सेट न हो। इस सबके बीच लोग अब अपने साथ भी कुछ घंटे, कुछ दिन बिताना चाहते हैं, इसलिए लोग तेज रफ्तार को छोड़कर धीमी और सुकून भरी जिंदगी की तरफ लौटना चाहते हैं।

स्लो लाइफ का सही मतलब: भले ही एक दौर में धीमी रफ्तार, आलस्य का पर्याय मानी जाती रही हो, लेकिन आज जब फास्ट लाइफ को विश्व स्वास्थ्य संगठन बर्नआउट और डिप्रेशन का सबसे बड़ा कारण बता रहा है, तब पहली बार जीवन के अस्थायीपन और नश्वरता से दो-चार हुए। यही वह समय था, जब बिना दफ्तर गए भी नौकरी कर सकने का विकल्प हासिल हुआ। जी हां, वर्क फ्रॉम होम ने लोगों को बताया कि अगर दफ्तर न जाना पड़े तो भले एक घंटे ज्यादा भी काम करना पड़े, लेकिन दफ्तर के रास्ते के जोखिम, तनाव और अनुपयोगी समय से बच सकते हैं। कोविड ने लोगों को डिजिटली ओवरलोड कर दिया। लगातार मीटिंग्स, सोशल मीडिया की इंगेजमेंट और नोटिफिकेशंस का सिरदर्द लगातार पेशंस की परीक्षाएं लेती रही और अंततः लोग इस तेज रफ्तारी से आजीज आ गए।

शहरों से गांव की तरफ वापसी: पूरी 20वीं सदी में और 21वीं सदी के पहले लगभग दो दशकों तक पलायन का मतलब गांव से शहर की ओर जाना ही होता रहा है। लेकिन कोविड के बाद यूरोप में 16 प्रतिशत और अमेरिका में 6 प्रतिशत लोग शहर छोड़कर गांवों में बस गए। भारत में भी उच्च आयवर्ग के 2 प्रतिशत लोग न सिर्फ बड़े शहरों को छोड़कर अपनी जड़ों की ओर रहने के लिए लौटे बल्कि जो पारंपरिक रूप से अपने गांवों या पैतृक स्थानों में नहीं गए, वे भी तेज रफ्तार महानगरों को छोड़कर स्लो मोशन की जिंदगी वाले जंगलों, पहाड़ों के बीच में गांव या गांवनुमा कस्बों की ओर रुख कर गए। मेट्रो शहरों में डेढ़ से दो फीसदी लोग छोटे शहरों या कस्बों की तरफ लौटे। हालांकि भारत में शहरों से गांव की ओर वापसी का आंकड़ा लगभग न के बराबर रहा, क्योंकि भारत के गांव सामान्य सुख-सुविधा वाली जिंदगी के अनुकूल नहीं हैं। इसलिए भारत में बड़े लोग या तो पहाड़ों में बसे छोटे शहरों या कम औद्योगिक और धुर खेतिहर इलाकों के कस्बों की तरफ लौटे। कोविड के बाद ही लोगों ने अपनी छतों पर बागवानी का रोमांच महसूस करना शुरू किया। स्थानीय बाजारों की वापसी हुई, पारंपरिक जीवनशैली में योग और ध्यान की हिस्सेदारी बढ़ी और मानसिक स्वास्थ्य को भी महत्वपूर्ण माना जाने लगा। इससे लोगों ने नींद का सुख महसूस किया, खुद उगाकर सब्जियां खाईं तो स्वाद के साथ आत्मसंतोष महसूस किया, रिश्तों में स्थायित्व और हार्मोनल हेल्थ में बेहतरी का एहसास किया। इसलिए स्लो लाइफ की रेटिंग जो हमेशा फास्ट लाइफ से नीचे रहती थी, पहली बार उससे ऊपर हुई।

कुछ भ्रम भी टूटे: दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से ही पूरी दूनिया में यह मान लिया गया था कि स्लो लाइफ का मतलब है- धीमा उत्पादन, धीमा पूंजी निर्माण, मतलब गरीबी और बदहाली। लेकिन कोविड के दौरान और उसके बाद स्लो लाइफ का मतलब यह नहीं रहा। लोगों की सोच में बदलाव आया। कोविड के बाद की स्लो लाइफ ने दुनिया को दिखाया कि धीमे होने का मतलब नाकारा होना नहीं है। धीमे होने का मतलब अर्थव्यवस्था का नुकसान नहीं है और न ही धीमे होने का मतलब उत्पादनहीनता है। स्लो जीवनशैली ने ज्यादा संतुष्टि दी और बेचैन उपभोगवाद पर लगाम लगाया। सबसे बड़ी दौलत रिश्तों में आई गर्मजोशी से मिली। लब्बोलुआब यह कि लोगों को, मजबूरी और उदासीनता में शुरू की गई स्लो लाइफ रास आ गई और अब धीरे-धीरे इससे मोहब्बत बढ़ती ही जा रही है। *

स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ने के तरीके

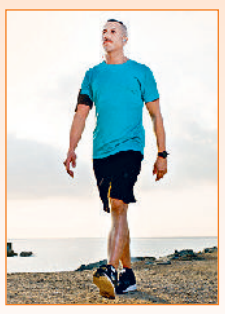

- हर दिन 30 मिनट किसी भी तरह की स्क्रीन से दूर रहें। चाहे टीवी की स्क्रीन हो, मोबाइल की या लैपटॉप की। इस दौरान फोन से नहीं, आस-पास की दुनिया से जुड़ें।
- सप्ताह में कम से कम एक दिन ऐसा रखें, जिसकी पहले से कोई प्लानिंग न हो। एक तरह से इस दिन को कुछ न करने की मस्ती का दिन बनाएं यानी नो प्लान डे।
- पैदल चलना सीखें। एक जमाने में आम आदमी हर दिन कम से कम 5-7 किलोमीटर पैदल चलता था। अब कई लोग ऐसे हैं, जो घर से बाहर सौ मीटर भी हर दिन पैदल नहीं चलते। अगर स्लो लाइफ का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो फिर से पैदल चलने की तरफ लौटें। पैदल चलने से मन भी प्रसन्न रहता है और तन भी स्वस्थ रहता है।
- काम की सीमाएं तय करें। दिन में निश्चित घंटों तक ही काम करें और हर दिन के काम की एक मात्रा तय कर लें। यह नहीं कि जब तक जग रहे हैं, काम करते रहें।
- धीमी जिंदगी का रोमांच महसूस करने के लिए दुनिया से भले कम जुड़ें, पर अपने आपसे दोस्ती जरूर करें। खुद से दोस्ती करना भी एक अव्यक्त सुख की स्थिति में रहना है।

हयूमन नेचर

शैलेंद्र सिंह

आमतौर पर माना जाता है कि इंट्रोवर्ट स्वभाव के लोगों में आत्मविश्वास और योग्यता की कमी होती है। जबकि यह केवल अलग तरह की एक पर्सनालिटी होती है। इस पर्सनालिटी के कुछ फायदे हैं तो वहीं कुछ नुकसान भी हैं।

न तो वीकनेस-न ही बीमारी अलग होती है इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी

आधुनिक मुखर और सोशल मीडिया प्रधान समाज में अंतर्मुखी यानी इंट्रोवर्ट होना अकसर गलतफहमियों का विषय बन जाता है। जबकि अनेक वैज्ञानिक शोध यह साबित करते हैं कि अंतर्मुखी होना न तो किसी तरह की कोई कमजोरी है और न ही बीमारी। हांस आइजेंक के व्यक्तित्व सिद्धांत के मुताबिक अंतर्मुखी और बहिर्मुखी होना व्यक्तियों में मस्तिष्क की उत्तेजना के अलग-अलग स्तरों का होना है। अंतर्मुखी लोगों का बेसलाइन पहले से अधिक होता है, इसलिए वे शोर, भीड़ और अत्यधिक सामाजिक उत्तेजना से जल्द थक जाते हैं। इसलिए वह बहिर्मुखी लोगों के विपरीत ऐसी तमाम स्थितियों में शांत और खुद तक सीमित रहते हैं। यह उनकी मात्र जैविक वास्तविकता होती है।

मुखर दौर में शांत लोग: आज के तेज आवाजों या शोरगुल से भरे दौर में कई बार अंतर्मुखी लोग खुद को हाशिए पर महसूस करने लगते हैं। लेकिन अगर अंतरराष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक शोधों की नजर से देखें तो अंतर्मुखी लोगों का यह हाशियाकरण उनकी अक्षमता नहीं बल्कि समाज की अपेक्षाओं का नतीजा है। इसलिए जेरोम कगन और हांस आइजेंक जैसे वैज्ञानिकों ने अपने शोध के जरिए साबित किया था कि अंतर्मुखी होना कोई ऐसा व्यवहार नहीं होता, जिसे लोग सीखें या उनमें वह परवरिश के कारण आए। इनके मुताबिक वास्तव में अंतर्मुखी होना एक किस्म की जैविक संरचना से जुड़ा तथ्य है, क्योंकि अंतर्मुखी लोगों का नर्वस सिस्टम दूसरे सामान्य लोगों के मुकाबले कहीं अधिक संवेदनशील होता है। लेकिन आधुनिक दौर में एक्सट्रोवर्ट यानी बहिर्मुखी लोगों को ही आदर्श मान लिया जाता है। इसके विपरीत इंट्रोवर्ट लोगों को महत्व और मान्यता नहीं दी जाती, जो महत्व और मान्यता बहिर्मुखी लोगों के खाते में आती है और इसकी शुरूआत बचपन से ही पहले घर में और फिर स्कूल में हो जाती है। वहां शांत रहने वाले बच्चों को उपेक्षित किया जाता है, भले ही वह कितना भी योग्य क्यों न हो। इसके बाद कॉर्पोरेट दफ्तरों में भी लीडर वही माना जाता है, जो ज्यादा बोलता हो और किसी भी तरह के मामले में त्वरित प्रतिक्रिया करता हो। जबकि कई बार संकट के समय अंतर्मुखी लोग ज्यादा बेहतर निर्णय लेते हैं। खासकर अगर वैज्ञानिकों, लेखकों आदि से जुड़ा कार्य हो। अडम ग्रांट ने अपने शोध से साबित किया कि प्रो-एक्टिव टीमों में अकसर ऐसे लीडर ज्यादा सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के फायदे: इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी होने के कई फायदे होते हैं। जैसे-अंतर्मुखी लोगों में गहन सोच और निर्णय क्षमता होती है। ये किसी भी विषय पर अकसर जानकारियों को बहुत गहराई तक प्रोसेस करते हैं और जल्दी में निर्णय लेने से बचते हैं। इसलिए उनके निर्णय अधिकतर सफल, सुरक्षित और सुलझे हुए होते हैं। यही कारण है कि रचनात्मक और जटिल कामों में उनकी गुणवत्ता उच्च स्तर की होती है। ऐसे लोगों में सुनने और सहानुभूति की क्षमता बहिर्मुखी लोगों से ज्यादा होती है। अंतर्मुखी लोग बेहतर श्रोता होते हैं, जिससे रिश्तों में विश्वास और गहराई बनती है। टीम लीडरशिप में यह गुण सहकर्मियों के हुनर को बाहर निकालने में मदद करता है। अंतर्मुखी लोगों में अकेले में लंबे समय तक काम करने की क्षमता और फोकस में बने रहने की प्रवृत्ति होती है। इस कारण ऐसे लोग अनुसंधान, लेखन, डिजाइन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में काफी सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के नुकसान: इस स्वाभाव के कारण इन लोगों में कुछ खामियां भी देखी जाती हैं। मसलन- अकसर ऐसे लोग वर्बल नेटवर्किंग, पब्लिक फेसिंग जॉब्स, सेल्स या राजनीतिक भूमिकाओं में फिट नहीं बैठते। ऐसी जगहों में अव्वल तो ये आते ही नहीं और आते हैं तो सफल नहीं होते हैं। दुनिया में कई काम और कई गतिविधियां ऐसी होती हैं, जो खुले रूप से बातचीत और आत्मप्रचार को तरजीह देती हैं। इस मामले में ये कमजोर पड़ते हैं। कई अध्ययनों में यह सामने आया है कि ऐसे लोगों में अवसाद या अकेलेपन से घिरने का जोखिम बना रहता है। लेकिन यह सभी अंतर्मुखी लोगों के लिए सच नहीं होता। आज के मुखर युग में शांत या गंभीर रहना अकसर आत्मविश्वास की कमी समझ लिया जाता है। इसलिए आज के दौर में ऐसे लोग कई बार प्रमोशन पाने, मान्यता हासिल करने और सार्वजनिक मंचों पर अपनी कामयाब उपस्थिति बनाने में नाकाम रहते हैं। *

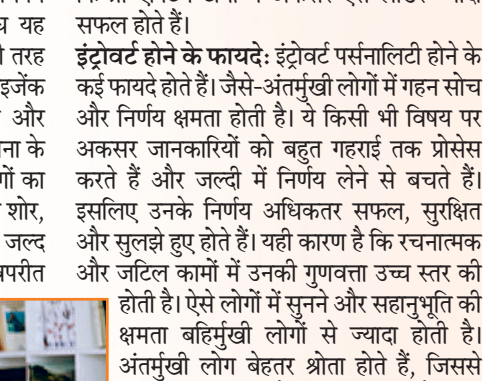

वासंती दोहे

घमंडीलाल अग्रवाल

टेसू की सरगम छिड़ी

धरती ने सज-धज किया, दुलहन-सा शृंगार।
पीत-वसन से झांकता, मानो पहला प्यार।।
जगा रही है कोकिला, मन में मीठी हूक।
गोरी पी की बाट में, बैठी बन कर मूक।।
भ्रमर सभी हैं पी रहे, फूलों का मकरंद।
पंचम सुर में गूंजते, खुशियों वाले छंद।।
धीमे-धीमे नशे में, पवन चले है खूब।
प्राणी-प्राणी जा रहा, अजब नशे में डूब।।
उर में जागी आग-सी, अंग-अंग उन्माद।
संग उन्हें भी आज लाए जा री सौतन याद।।
कण-कण से गायब हुआ, सर्दी का आतंक।
मुस्कानों ने पा लिए, सबसे ज्यादा अंक।।
धूप कुनमुनी डोलती, गरमाया परिवेश।
मधुर गंध का बांटता, हर उपवन संदेश।।
सरसों रानी पर चढ़ा, यों यौवन का रंग।
ठुमक-ठुमक कर बोलती, चली पिया के संग।।
बैरागी मन पूछता, किसका है यह खेल।
मौसम का जादू चला, फली प्रीति की बेल।।
टेसू की सरगम छिड़ी, महुआ के हैं ठाठ।
जरा देखिए खुल गई, फगुनाहट की हाट।।

व्यंग्य / अजय अनुरागी

अफसर की टांग

सुना था कानून के हाथ बहुत लंबे होते हैं, लेकिन देखा यह भी गया है कि कुछ अफसरों की टांग भी बहुत लंबी होती है। ऐसे ही एक अफसर की टांग दूर तक पसरी रहती थी। वह बैठता इस कक्ष में था, और टांग उस कक्ष तक फैलाए रखता था। कार्यालय के जिस कक्ष में जाओ वहीं अफसर की टांग घूमती नजर आती थी। अफसर जहां नहीं पहुंच पाता था, वहां भी उसकी टांग पहुंच जाती थी। कई बार अफसर से पहले उसकी टांग उपस्थित रहा करती थी। लोग अफसर से कम उसकी टांग से ज्यादा परेशान रहा करते थे। अब अफसर की टांगों में घंटी कौन बांधे भला!

टांग अफसर से भी ज्यादा चालाक थी। किसी को पास फटकने नहीं देती थी। अफसर की अनुपस्थिति में अफसर की टांग शासन किया करती थी। लोग चाहते थे कि अफसर टांग को थोड़ा लूज करें, तो चैन की सांस आ सके। हालांकि अफसर छोटा-मोटा था, लेकिन उसकी टांग बहुत बड़ी थी। उसकी टांग भरोसे लायक तो थी ही नहीं, फिर भी उस पर भरोसा करना पड़ता था। वह चालाक था और दूसरों की टांग को अपने हित में इस्तेमाल करना जानता था। इसलिए लोग अफसर की टांगों से अपनी टांगें बचाते फिरते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि अफसर उनकी टांगों को अपनी टांगों में ना बदल डाले। अफसर टांग का बहुत कच्चा था, इसलिए अपनी टांग को हर जगह टांग कर ले जाता था। टांग के बिना कहीं जाता भी नहीं था। टांग ने इतना प्रभाव जमा लिया था कि अफसर प्रभावहीन होने लगा था। अफसर की दोनों टांगों की दो अलग-अलग परंपराएं थीं। मगर अफसर दोनों को साध लेता था। अकसर लोग अफसर की पहली टांग के भरोसे दूसरी टांग से धोखा खा बैठते थे।

अफसर की टांगों को लेकर लोगों में बड़ा कंफ्यूजन था। पता नहीं पड़ता था कि पहली कौन सी है और दूसरी कौन सी है? लोग जिसे पहली समझते थे, वह दूसरी निकलती थी। जिसे दूसरी समझते थे, वहां टांग होती ही नहीं थी। चालाक अफसर हर मुद्दे पर एक टांग को फंसा कर रखता था तथा दूसरी टांग को बचाकर रखता था। टांग विहीन अफसर नख-दंत विहीन शेर की तरह होता है, जो गुर्रा तो सकता है मगर दबोच नहीं सकता। वह अफसर ही क्या जिसके पास टांग न हो! वह टांग ही क्या जो अड़ना न जाने। अफसर की टांगों की करामात यह थी, कि पहली उठ जाती थी तो दूसरी बैठी रहती थी, और दूसरी उठ जाती थी तो पहली लेट जाती थी। अफसर चाहता था एक साथ, एक टांग, दो काम करती रहे, ताकि टांग की स्ट्रेटेजी कोई पकड़ ना पाए। टांग से परेशान लोग, टांग को उखाड़ फेंकने के लिए, एकजुट हुए। अंत में हुआ यह कि अफसर उखड़ गया, मगर उसकी टांगें नहीं उखड़ पाईं। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

स्त्री के आंतरिक द्वंद्व की कहानियां

यह सही है कि बदलते समय के साथ परिवार और घर से बाहर भी स्त्री की भूमिका में बड़ा बदलाव आया है। मगर कमोबेश उसकी पीड़ा, घुटन और त्रासदियां अब तक नहीं बदलीं। हां, उसके रूप जरूर बदले हैं। वरिष्ठ लेखिका कल्पना मनोरमा ने अपने कहानी संग्रह 'एक दिन का सफर' में स्त्री के इसी बहुआयामी द्वंद्व को बड़ी बारीकी और मार्मिकता से उकेरा है। इन कहानियों में उन्होंने बेशुमार दबावों, तनावों से आहत स्त्री की पीड़ा को स्वर दिया है। संग्रह की कहानियां सशक्त होने के साथ ही समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक भी हैं। इसमें आज के दौर की महिलाओं के संघर्ष को भी देखा जा सकता है।

इस संग्रह की पहली कहानी 'कितनी कैदें' के किरदार की घुटन, जैसे आत्मा को निर्ममता से छील कर लहूलुहान कर देती है। मर्यादा, इज्जत के नाम पर किस तरह बेटियां बिना अपराध के बलि पर चढ़ा दी जाती हैं, इस कटु सत्य को कहानी बड़े मार्मिक तरीके से बयां करती है। शीर्षक कहानी 'एक दिन का सफर' में नायिका के भीतर का द्वंद्व उसका अपना नहीं है। यह स्त्री का सामूहिक द्वंद्व है। वही द्वंद्व, जिसका सामना उसे बाहर-भीतर हर कहीं करना होता है। 'आखिरी सिगरेट' दांपत्य जीवन में प्रेम की लालसा में घुटती एक स्त्री मन की कहानी है तो 'गुनिता की गुड़िया' कैद से बाहर निकलने की एक स्त्री की छटपटाहट को बयां करती है। 'दुख का बोनसाई' मायके से लड़की के अटूट रिश्ते की कहानी है। ये कहानियां ऐसी हैं, जिनसे सहज ही हर स्त्री जुड़ाव महसूस करेगी। सटीक-जीवंत रूपकों के प्रयोग से भाषा जीवंत हो उठी है। कहानियों की भाषा ही नहीं कहन का शिल्प भी बेहतरीन है। *

पुस्तक: एक दिन का सफर, **लेखिका:** कल्पना मनोरमा,
मूल्य: 195 रुपए, **प्रकाशक:** अनन्य प्रकाशन, दिल्ली

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

शक

शाम को ऑफिस से घर लौटते ही पति हरीश से उपासना ने कहा, 'देखिए, रोज शाम को पता नहीं पिताजी कहां जाते हैं और देर तक लौटते हैं।' 'कहां जाएंगे पार्क के अलावा। वहां इनके हम उम्र लोग मिलते होंगे। बस उनके साथ ही गपशप करते होंगे।' हरीश ने जवाब दिया।

'नहीं मुझे ऐसा नहीं लगता पिताजी कहीं और ही जाते हैं और मुझसे रोज अलग-अलग तरह का नाश्ता बनवाते हैं।' उपासना ने बताया। 'तुम भी बेवजह पिताजी पर शक कर रही हो। जो उनकी इच्छा है उन्हें करने दो। मां के चले जाने के बाद उनकी इच्छाओं का ख्याल हम नहीं रखेंगे तो भला कौन रखेगा?' हरीश ने समझाया। उसी समय पिताजी कमरे के अंदर आए और बोले, 'बहू आज गर्मा-गर्म समोसे बनाकर पैक कर दो, मुझे जाना है।' 'जी पिताजी।' उपासना ने धीरे से कहा। समोसे लेकर जैसे ही पिताजी घर से निकले, उपासना भी छुपते हुए उनके पीछे-पीछे चल दी। एक-डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद पिताजी एक वृद्धाश्रम के भीतर चले गए। 'अच्छा तो यह बात है। अपने किसी यार-दोस्त को खिलाने लाते हैं पकवान।' उपासना मन ही मन बुदबुदाई। फिर दावाजे की ओट लेकर खड़ी हो गई। पिताजी किसी के साथ बैठकर समोसे खाते हुए ठहाके लगाने लगे। 'अरे, यह आवाज तो बहुत जानी-पहचानी लग रही है। कौन हैं वो, जिसके लिए पिताजी रोज नाश्ता बनवाकर लाते हैं?' मन ही मन बुदबुदाते हुए उपासना ने कमरे के भीतर झांका। 'अरे यह क्या!' वह अवाक रह गई। उसके पैरों तले की जमीन खिसक गई। 'मेरे बाबूजी वृद्धाश्रम में!' खुद से कहकर वह रोने लगी। दरअसल, उपासना के बाबूजी पिछले एक महीने से वृद्धाश्रम में रह रहे थे, जिसकी खबर केवल हरीश के पिताजी को ही थी। इसलिए वे रोज उपासना और हरीश से बताए बिना अपने समधी से मिलने यहां आया करते थे। *

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम

अन्नामलाईयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै

धार्मिक स्थल
शिखर चंद जैन

आज पूरे देश में महाशिवरात्रि का पावन पर्व मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश भर के शिव-शक्ति मंदिरों में भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। इस मौके पर हम आपको दक्षिण भारत में स्थित कुछ प्राचीन, भव्य और प्रसिद्ध शिव मंदिरों की विशेषताओं के बारे में बता रहे हैं। साथ ही गुजरात में स्थित अनोखे स्तंभेश्वर महादेव मंदिर के बारे में भी बता रहे हैं।

महादेव शिव-पार्वती को समर्पित भव्य-अनोखे-प्रसिद्ध मंदिर

जिस तरह उत्तर भारत में स्थित महाकालेश्वर, काशी विश्वनाथ, नागेश्वर महादेव, वैद्यनाथ आदि शिव मंदिरों के प्रति श्रद्धालुओं में असीम श्रद्धा है। उसी तरह दक्षिण भारत में भी कई अनोखे और भव्य मंदिर स्थित हैं। प्राचीन भारत में चोल, पल्लव और चालुक्य जैसे कई राजवंशों ने लंबे समय तक दक्षिण भारत पर शासन किया। अपने शासनकाल में उन राजाओं ने देवों के देव महादेव भगवान शिव के अत्यंत भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। इन मंदिरों की अनोखी वास्तुकला दुनिया भर के पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करती है। इनमें से कुछ मंदिर देश में स्थित बारह ज्योतिर्लिंगों में भी सम्मिलित हैं। ये प्राचीन मंदिर श्रद्धालुओं और शिव भक्तों की आस्था के प्रमुख केंद्र हैं।

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम, आंध्र प्रदेशः यह शिव मंदिर आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम नामक छोटे से शहर में कृष्णा नदी के किनारे स्थित है। सातवाहन शासनकाल के इतिहास के अनुसार इस मंदिर का निर्माण काल द्वितीय शताब्दी के आस-पास माना जाता है। बाद में विजय नगर साम्राज्य के राजाओं और छत्रपति शिवाजी महाराज ने इस मंदिर में मंडप सहित कई संरचनाओं का निर्माण करवाया। यह मंदिर नल्लामलाई पहाड़ियों पर स्थित है, जो मंदिर को एक सुंदर पृष्ठभूमि प्रदान करता है। दक्षिण भारत में स्थित मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मंदिर की एक और विशेषता यह भी है कि यह देवी सती के 52 शक्ति पीठों में से एक है। यहां भगवान शिव की मल्लिकार्जुन अवतार में और माता पार्वती की भ्रामरंबा रूप में पूजा की जाती है। यहां महाशिवरात्रि, उगादि, कार्तिकाई, श्रवणमहोत्सवम धूमधाम से मनाते हैं।

तट मंदिर, महाबलीपुरम

तट मंदिर, महाबलीपुरम, तमिलनाडुः तट मंदिर दक्षिण भारत के सबसे पुराने संरचनात्मक मंदिरों में से एक है। यह परिसर बंगाल की खाड़ी के तट पर तमिलनाडु के महाबलीपुरम में समुद्र के किनारे स्थित है। इसे अपनी द्रविड़ वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण पल्लव वंश के राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह) द्वारा ग्रेनाइट पत्थरों से कराया गया। इसके परिसर में तीन मंदिर हैं, जिनमें से दो भगवान शिव को और एक भगवान विष्णु को समर्पित है। मुख्य मंदिर पूर्व दिशा की ओर इस तरह से निर्मित है, जिससे सूर्योदय की किरणें शिवलिंग तक पहुंच सकें। सन् 1984 में इस मंदिर को महाबलीपुरम में स्मारकों के समूह के हिस्से के रूप में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

अन्नामलैयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई, तमिलनाडुः तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई शहर में स्थित अन्नामलैयार मंदिर बहुत प्रसिद्ध शिव मंदिर है। अरुणाचल पहाड़ियों की तलहटी में स्थित होने के कारण इसे अरुणाचलेश्वर मंदिर भी कहा जाता है। यह पंचभूत स्थलों में से एक है, जहां भगवान शिव अग्नि तत्व के रूप में विराजमान हैं। शिवलिंग को अग्निलिंग भी कहा जाता है और यहां भगवान शिव की पूजा अरुणाचलेश्वर के रूप में की जाती है। अन्नामलैयार मंदिर परिसर भारत के सबसे विशाल मंदिर परिसरों में से एक है। इस मंदिर का 11 मंजिला गोपुरम भारत के सबसे ऊंचे मंदिर गोपुरमों में से एक है, जिसकी ऊंचाई 66 मीटर है। इस मंदिर के मुख्य देवता अरुणाचलेश्वर और अन्नामलाई अम्मन हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित यह मंदिर अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला के लिए जाना जाता है।

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै, तमिलनाडुः मंदिर नगरी के नाम से विख्यात मदुरै के सबसे भव्य मंदिरों में से एक अरुलमिगु मीनाक्षी अम्मन मंदिर है, जिसे मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर भी कहा जाता है। इस मंदिर की मुख्य देवी मीनाक्षी देवी हैं, जिन्हें देवी पार्वती का दिव्य अवतार माना जाता है। भगवान शिव की पूजा भगवान सुंदरेश्वरार के रूप में की जाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह वह स्थान है, जहां सुंदरेश्वरार ने देवी मीनाक्षी से विवाह किया था। सन 1190 से 1205 ईसवी तक शासन करने वाले पांड्य राजा सदावर्मन कुलशेखरन प्रथम ने मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर अपने गोपुरमों (मंदिर के शिखर), विशाल हॉल, मूर्तियों, नक्काशी और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। यह दक्षिण भारत के भव्य मंदिरों में से एक है। *

स्तंभेश्वर महादेव, वड़ोदरा गुजरात

दक्षिण भारत से दूर पश्चिमी राज्य गुजरात में भी एक प्रसिद्ध-विशिष्ट मंदिर स्तंभेश्वर महादेव स्थित है। इसमें एक ऐसा अनोखा शिवलिंग है, जिसका जलाभिषेक स्वयं समुद्र अपने जल से प्रतिदिन दो बार करता है। यह मंदिर अरब सागर में स्थित है और दिन में दो बार समुद्र में डूब कर अदृश्य हो जाता है। समुद्र का खारा जल इस शिवलिंग को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता। यह मंदिर गुजरात के भरूच शहर से लगभग 35 किलोमीटर दूर सागर विस्तार के निकट जंबुसबुरता लुकालुका के नजदीक कावि, कंबोई गांव में स्थित है। इस मंदिर में स्वयंभू शिवलिंग की ऊंचाई 4 फीट और व्यास 2 फीट है। इस शिवलिंग के चारों ओर तट पर मंदिर का निर्माण सातवीं सदी के आस-पास हुआ था। माना जाता है कि चावड़ी के संतों द्वारा इसका निर्माण करवाया गया था। बाद में इस मंदिर का पुनर्निमाण आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा भी करवाया गया था। शिव महापुराण, स्कंद पुराण जैसे पौराणिक ग्रंथों में भी इस मंदिर के शिवलिंग का उल्लेख मिलता है।

मंदिर के दर्शन तभी संभव हैं, जब समुद्र में ज्वार कम हो और समुद्र का पानी तट से उतरने लगे। इस मंदिर के ओझल होने का कारण समुद्र में उठा ज्वार होता है। ज्वार के कारण पानी के उद्वेग के समय शिवलिंग पूरी तरह से जलमग्न हो जाता है। मंदिर भी सागर की गहरी लहरों में समा जाता है। तब तट से भी मंदिर दिखना बंद हो जाता है। यहां आने वाले शिवभक्तों को प्रतिदिन के दर्शन के समय ज्वार की जानकारी दी जाती है, जिससे ज्वार-भाटे के समय की जानकारी रहने पर उन्हें किसी परेशानी का सामना न करना पड़े। स्तंभेश्वर महादेव मंदिर में हर अमावस्या को मेला लगता है। प्रदोष, पूर्णिमा, एकादशी को यहां पूरी रात पूजा-अर्चना होती है। भगवान शिव के इस अद्भुत मंदिर में देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते रहते हैं।

- प्रभा पारीक

भारत में भी धूमधाम से मनाते हैं तिब्बती नव वर्ष लोसर फेस्टिवल

पर्व-संस्कृति
अंजू जैन

हम सब पश्चिमी कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी को और हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र प्रतिपदा को नव वर्ष मनाते ही हैं। इनके अलावा कुछ प्रदेशों में तिब्बती नववर्ष लोसर भी मनाया जाता है। इसकी विशेषताओं पर एक नजर।

सुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को साकार होते देखने जैसा है तिब्बती नव वर्ष का भारत में धूमधाम से मनाया जाना। आज पूरी दुनिया में लोग एक-दूसरे के खान-पान, पहनावे और त्योहारों को अपना रहे हैं। भारत में पाश्चात्य नव वर्ष मनाया जाना तो बहुत सामान्य बात है लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि हमारे देश में तिब्बती नव वर्ष लोसर को भी धूमधाम से मनाया जाता है।

क्या है लोसर उत्सवः 'लोसर' दो तिब्बती शब्दों से मिलकर बना है, जिसमें 'लो' का अर्थ 'नया' और 'सर' का अर्थ 'वर्ष' होता है, जिसका सामूहिक अर्थ 'नया साल' है। लोसर तिब्बत, नेपाल और भूटान का सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध त्योहार है। हमारे देश में यह मुख्य रूप से सिक्किम, लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में तिब्बती बौद्ध समुदाय एवं कुछ स्थानीय जनजातियों द्वारा मनाया जाता है। यह उत्सव जीवन के नवीनीकरण, समृद्धि और आध्यात्मिक शुद्धि का प्रतीक है।

सांस्कृतिक महत्वः लोसर उत्सव को हालांकि 'तिब्बती नव वर्ष' कहा जाता है, लेकिन इसकी जड़ें बौद्ध धर्म के आगमन से भी पुरानी हैं। यह मूलतः 'बोन' परंपरा का हिस्सा था, जहां लोग सर्दियों के अंत में प्रकृति को धन्यवाद देने के लिए धूप जलाते थे। बाद में, जब बौद्ध धर्म तिब्बत की मुख्य धारा बना, तो यह उत्सव आध्यात्मिक और धार्मिक रंगों में रंग गया। इस वर्ष लोसर 18 फरवरी, बुधवार को मनाया जाएगा। इसका मुख्य उत्सव आमतौर पर तीन दिनों तक चलता है, लेकिन यह त्योहार 15 दिनों तक मनाया जाता है।

साफ-सफाई का महत्वः लोसर में साफ-सफाई का खास महत्व है। सबसे पहले 'लाबा लोसर' मनाया जाता है, जिसमें घरों की पुताई और सफाई की जाती है। सभी पुरानी, अनुपयोगी वस्तुओं को हटा दिया जाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से घर में अच्छा स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि आती है। इस अवसर पर घरों को सजाया जाता है और नई प्रार्थना पताकाएं फहराई जाती हैं।

विशेष खान-पानः लोसर पर विशेष भोजन जैसे 'खप्से' (तले हुए बिस्कुट) और 'गुथुक' (एक प्रकार का नूडल सूप) तैयार किए जाते हैं। अमावस्या की पूर्व संध्या पर परिवार 'गुथुक' पीते हैं।

तीन दिनों तक विशेष कार्यक्रमः लोसर उत्सव के पहले दिन सूर्योदय से पहले ही मठों में शंखों की आवाज गूंजने लगती है। इस दिन लोग अपने धर्मगुरुओं का आशीर्वाद लेते हैं। देवताओं और आत्माओं के लिए धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, जिसमें घरों में घी के दीये जलाना और बौद्ध धर्मग्रंथों का पाठ करना शामिल है। दलाई लामा और अन्य उच्च लामाओं की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना की जाती है। घरों में 'चेमार' (सत्तू और मक्खन का मिश्रण) का भोग लगाया जाता है।

दूसरा दिन 'ग्यालपो लोसर' (राजाओं का दिन) होता है। यह दिन सामुदायिक मिलन का होता है। ऐतिहासिक रूप से यह दिन शासकों और उनके मंत्रियों के बीच संवाद का होता था। आज के संदर्भ में, यह सार्वजनिक समारोहों, नाच-गाने और मेलों का दिन है। लद्दाख और धर्मशाला की सड़कों पर पारंपरिक पोशाक 'चूबा' पहने लोग एक-दूसरे को 'लोसर ताशी देलेक' (नए साल की शुभ मंगलकामनाएं) कहते हैं।

तीसरा दिन 'चो-क्योंग लोसर' (धर्म रक्षकों का दिन) है। इस दिन लोग पहाड़ की चोटियों पर जाकर 'धूप' (सांग) जलाते हैं और प्रार्थना झंडे (लुंगता) फहराते हैं। ये झंडे शांति, करुणा और शक्ति के प्रतीक हैं।

मुखौटा नृत्य (छम): लोसर उत्सव का सबसे रोमांचक पहलू मठों में होने वाला 'छम' या मुखौटा नृत्य है। यह नृत्य बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। रंगीन रेशमी कपड़े और भयानक दिखने वाले मुखौटे पहनकर लामा नृत्य करते हैं। ड्रम और लंबी झांझों की थाप पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों को एक अलग ही आध्यात्मिक दुनिया में ले जाता है। *

फैशन जोन
प्रतिमा अरोड़ा

बदलते मौसम के अनुसार हमारे ड्रेसिंग सेंस में बदलाव होने लगता है। यही वजह है कि इन दिनों यंगस्टर्स शर्ट और जैकेट के कॉम्बो यानी शैकेट पहनना काफी पसंद कर रहे हैं। इसकी क्या है खासियतें और यंगस्टर्स इन्हें क्यों पसंद करते हैं, इस बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

बदलते मौसम में परफेक्ट शैकेट से मिले स्मार्ट लुक

सर्दी का मौसम जैसे-जैसे विदा ले रहा है, मौसम हल्का गर्म होने लगा है, तो फैशन की दुनिया भी करवट ले रही है। भारी कोट, मोटे स्वेटर, अब वार्डरोब या अलमारियों में जाने लगे हैं। इनके स्थान पर हल्के स्टाइलिश और बहुपयोगी शर्ट+जैकेट या शैकेट का क्रेज दिनोंदिन बढ़ने लगा है। शैकेट वास्तव में शर्ट की आरामदेह संरचना और जैकेट की मजबूती का मिश्रण होता है। यह न तो पूरी तरह से शर्ट और न ही पूरी तरह से जैकेट बल्कि दोनों का संतुलित रूप होता है। इसीलिए यंगस्टर्स के बीच यह तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

इसलिए युवाओं को है पसंदः फरवरी और मार्च का महीना वासंती मौसम के महीने होते हैं। इस दौरान न ज्यादा ठंड और न ही ज्यादा गर्मी होती है। ऐसे समय में शैकेट युवाओं के लिए परफेक्ट विकल्प बनकर आता है। लेयरिंग में आसानी भी एक बड़ा कारण है कि यह तेजी से ट्रेंडी हो रहा है। दरअसल टी-शर्ट, फुलस्लीव शर्ट या पतली हुडी के ऊपर शैकेट पहनकर स्टाइलिश लुक मिल जाता है। इसे पहनने का एक फायदा यह भी है कि यह शरीर पर टाइटनेस के साथ चिपकता नहीं है। शरीर लंबे समय तक इसके साथ कंफर्टेबल रहता है और सबसे बड़ी बात यह है कि यह यूनिसेक्स अपील रखता है। यह लड़कों और लड़कियों दोनों पर समान रूप से सूट करता है। इसीलिए खासतौर पर कॉलेज गोइंग यंगस्टर्स को शैकेट बहुत पसंद आ रहा है। इसका फैब्रिक पतला होता है। यह फिट होता है लेकिन बहुत टाइट नहीं होता है। यह ठंड से बचाता है लेकिन बहुत गर्म अहसास नहीं कराता है। इसके बटन और सिलाई काफी मजबूत होती है। इसका वजन हल्का होता है ताकि लेयरिंग को आसान बनाए। इन्हीं वजहों से यंगस्टर्स इन्हें पहनना पसंद करते हैं। शैकेट का ट्रेंड सिर्फ अपने देश में ही नहीं पूरी दुनिया के युवाओं को भा रहा है, क्योंकि अगर फैशन इतिहास को देखें तो शैकेट की जड़ें वर्किंग मैन वियर और मिलिट्री क्लोदिंग से जुड़ी हुई हैं।

बनता है इन फैब्रिक्स सेः शैकेट आमतौर पर कॉटन ट्विल, डेनिम, कॉडरॉय और वूलेन मिश्रित फैब्रिक से बने होते हैं। हल्के वजन वाले कॉटन मिक्स शैकेट इस बदलते मौसम में ज्यादा पसंद किए जाते हैं। अगर थोड़ी ठंड महसूस हो तो वूलेन मिक्स्ड शैकेट आप वियर कर सकते हैं। वैसे तो आपको शैकेट्स में कलर्स की ढेरों वैरायटीज मिल जाएंगी। आप उनमें से अपनी पसंद का कोई कलर सेलेक्ट कर सकते हैं। लेकिन अगर शैकेट में कलर और पैटर्न ट्रेंड की बात करें तो ऑलिव ग्रीन, टैन ब्राउन, चारकोल ग्रे, डेनिम ब्लू कलर के शैकेट्स बहुत अट्रैक्टिव लगते हैं। अब यंगस्टर्स के बीच ब्राइट कलर वाले शैकेट्स के बजाय सॉफ्ट और अर्थी टोन वाले शैकेट्स की मांग ज्यादा बढ़ रही है, क्योंकि ये ज्यादा मैचिंग फ्रेंडली होते हैं। जहां तक शैकेट में ट्रेंडी पैटर्न और डिजाइन की बात है तो चेक्स प्रिंटेड और प्लेड पैटर्न यंगस्टर्स के बीच काफी पसंद किए जाते हैं।

लगातार बढ़ रही है डिमांडः हाल के सालों में बदलते मौसम में बाजार में शैकेट की लगातार मांग बढ़ रही है। क्योंकि कुछ वर्षों में ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और लोकल ब्रांड ने अपनी नियमित क्लेक्शन में भी शैकेट को शामिल किया है। फैशन रिटेल से जुड़े जानकारों के मुताबिक यह ट्रांजिशनल वियर यानी बदलते मौसम के समय का फैशन हर साल 15 से 20 फीसदी तक वृद्धि हासिल कर लेता है। इसकी बढ़ती मांग का एक कारण यह है कि यह मीडियम रेंज में उपलब्ध होता है। वियर करने पर बहुत सोबर और एलीगेंट लुक देता है। इसके अगर बजट रेंज की बात करें तो शैकेट 800 से 1500 रुपए में मिल जाता है। मिड रेंज की बात करें तो 1500 से 3000 रुपए के बीच इसका रेंज देखा जा सकता है। जबकि प्रीमियम रेंज की बात करें तो 3000 रुपए से ऊपर आपको फाइन क्वालिटी के शैकेट मिल जाते हैं। इसकी यह रेंज दर्शाती है कि हर वर्ग के यंगस्टर्स के लिए शैकेट्स उपलब्ध हैं। यही कारण है कि अपने देश में इसकी डिमांड बदलते मौसम में बढ़ जाती है। इसकी मांग के पीछे एक कारण सस्टेनेबिल्टी भी है। कई ब्रांड अब रि-साइकिल्ड फैब्रिक और आर्गेनिक कॉटन से शैकेट बना रहे हैं। उससे पर्यावरण पर कम असर पड़ता है और युवावर्ग को यह सोच पसंद आती है कि वे स्टाइल के साथ-साथ अपनी सामाजिक जिम्मेदारियां भी पूरी कर रहे हैं।

पर्सनालिटी को देता है नया लुकः शैकेट की एक खासियत यह है कि यह तमाम दूसरे फैशन के साथ मर्ज नहीं हो रहा बल्कि एक अलग से पहचान बनाने में कामयाब है। आज के दौर में यंगस्टर्स फैशन को केवल कोई भी ड्रेस पहनने तक सीमित नहीं मानते बल्कि उससे अपने आराम और प्रभाव की तुलना करते हैं। शैकेट इन दोनों कसौटियों में खरा उतरता है। यही कारण है कि यह युवाओं को पसंद आता है। इनसे उन्हें स्मार्ट लुक मिलता है। *

फिल्म 'विधाता' में दिलीप कुमार-शम्मी कपूर

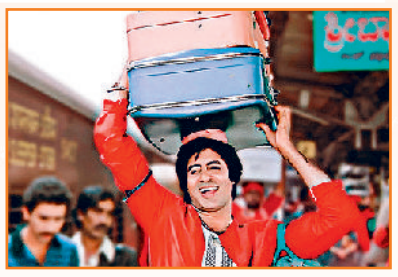
फिल्म 'कुली' के सीन में अमिताभ बच्चन

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का क्लाइमेक्स सीन

सिने ट्रेंड
अशोक वाधवाणी

रेल में सफर का अलग ही मजा होता है। देश के करोड़ों लोगों की लाइफलाइन से जुड़ी रेलगाड़ी को बॉलीवुड फिल्मों में भी खूब दिखाया जाता रहा है। खास बात यह है कि फिल्मों में ट्रेन वाले सीन और सॉन्ग्स खूब पॉपुलर भी हुए हैं। यहां बात कुछ ऐसी ही फिल्मों की, जिनके टाइटल, सीन या सॉन्ग में ट्रेन मौजूद रही है।

फिल्मों में खूब हुए पॉपुलर ट्रेन बेस्ड सींस-सॉन्ग्स

अपने देश में आज भी अधिकांश लोगों के लिए रेल यात्रा सबसे सुविधाजनक और सस्ती मानी जाती है। यही वजह है कि हिंदी फिल्मों में भी मालगाड़ी से लेकर, यात्री गाड़ी और अत्याधुनिक ट्रेनें भी दिखाई जाती रही हैं। ट्रेन यात्रा से जुड़े दृश्य और गीत मन में अमिट छाप छोड़ते हैं। एंटरटेनमेंट के लिए रेल में रोमांस, रोमांच, रहस्य के अलावा रेलवे स्टेशन, प्लेटफॉर्म, रेल की पटरियां, कुली आदि बहुत कुछ हिंदी फिल्मों में दिखाए जाते रहे हैं।

ट्रेन से जुड़े फिल्मों के नामः बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनी हैं, जिनके टाइटल ट्रेन या रेलवे के इर्द-गिर्द रखे गए हैं। पुराने जमाने की नायिका नादिया की कई चर्चित फिल्मों के नाम ट्रेन के नाम पर ही रखे गए। उनमें से प्रमुख हैं 'मिस फ्रंटियर मेल'(1936), 'पंजाब मेल'(1939), 'दिल्ली एक्सप्रेस' (1949)। इसी क्रम में 'प्लेटफॉर्म' (1955), '27 डाउन' (1974), 'द ट्रेन' (1971), 'कुली' (1984), 'द बर्निंग ट्रेन' (1980), 'चेन्नई एक्सप्रेस' (2000) जैसी फिल्मों के टाइटल्स से ही पता चलता है कि फिल्म की कहानी रेल के इर्द-गिर्द घूमने वाली होगी।

फिल्मी दृश्यों में ट्रेनः बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनीं, जिनकी शुरुआत में ही रेल दिखाई गई, जैसे- दोस्त (1974)। कुछ फिल्मों का क्लाइमैक्स रेलवे स्टेशन पर फिल्माया गया है, जैसे- 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे'(1995)। इसके अलावा शाहरुख खान की कुछ और फिल्मों में भी ट्रेन की अपनी विशेष भूमिका रही है। 'दिल से', 'स्वदेश', 'वीर-जारा', 'रईस', 'पठान', 'जवान' आदि कई फिल्मों में लाजवाब रेल सीन फिल्माए गए हैं।

धर्मेंद्र का रेल कनेक्शनः पिछले वर्ष दिवंगत हुए सदाबहार अभिनेता धर्मेंद्र की शुरुआती फिल्में जैसे-'शोला और शबनम', 'आपकी परछाइयां', 'फूल और पत्थर' से लेकर 'दोस्त' आदि में रेल का रोल इंपॉर्टेंट रहा। दिलचस्प बात यह है कि धर्मेंद्र ने फिल्मों में आने से पहले कुछ समय तक रेलवे में क्लर्क की नौकरी भी की थी।

ट्रेन में फिल्माए गए कुछ यादगार दृश्यः फिल्मों में ट्रेन के कई ऐसे दृश्य फिल्माए गए हैं, जो यादगार बन गए। 'गांधी' (1982) में एक छोटा सा सीन है, जोकि गांधी जी के जीवन का टर्निंग पॉइंट बना। दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन के फर्स्ट क्लास में यात्रा करने के कारण एक अंग्रेज, नाराज होकर, गांधीजी को एक स्टेशन पर सामान समेत डिब्बे के बाहर फेंक देता है। इसके अलावा इसी फिल्म में गांधीजी की ट्रेन से यात्रा के कुछ और सीन भी हैं। 'जब वी मेट' (2007) में फिल्म का नायक मुंबई से ट्रेन में चढ़ता है। रतलाम स्टेशन पर नायिका की ट्रेन छूटती है। आगे दोनों की ट्रेन जर्नी, रेल कर्मियों के साथ उनका वार्तालाप आदि कई रोचक, मनोरंजक दृश्य हैं। 'बड़े मियां, छोटे मियां' (1998) में अमिताभ बच्चन और गोविंदा ट्रेन की बोगी के सभी यात्रियों का सामान, चालाकी से लूट लेते हैं। कई कलाकारों ने फिल्म में रेल कर्मियों के रोल निभाए हैं। 'अजनबी' (1974) में राजेश खन्ना स्टेशन मास्टर बने हैं। 'विधाता' (1982) में दिलीप कुमार और शम्मी कपूर ट्रेन ड्राइवर बने हैं। ओम प्रकाश ने 'जूली' (1975) में ट्रेन ड्राइवर का रोल निभाया है।

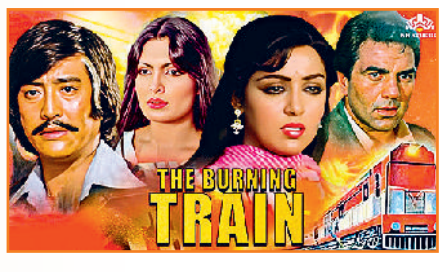

ट्रेन पर आधारित गीतः ट्रेन के भीतर, ट्रेन की छत पर या ट्रेन के इर्द-गिर्द कई फिल्मों के गीत भी फिल्माए गए हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए। 'आओ बच्चो तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की' ट्रेन में फिल्माए गए फिल्म 'जागृति' (1954) के इस गाने में अध्यापक की भूमिका में अभि भट्टाचार्य, छात्रों को भारत देश के इतिहास से अवगत करवाते हैं। 'आशीर्वाद' (1968) में अशोक कुमार द्वारा गाया और उन्हीं पर फिल्माया रैप सांग 'रेलगाड़ी छुक-छुक-छुक' बॉलीवुड का शुरुआती रैप सॉन्ग है। इसके कई रिमिक्स भी बन चुके हैं। 'दिल से' (1998) में एक नया, अनोखा प्रयोग किया गया था। फिल्म मे 'चल छैंया छैंया' गीत रेल के डिब्बों पर पिक्चराइज किया गया डांस सॉन्ग है। 'दोस्त' (1974) का गीत 'गाड़ी बुला रही है, सीटी बजा रही है...' आज भी लोकप्रिय है। फिल्म 'कुली' (1983) में अमिताभ बच्चन पर फिल्माए गए गीत 'सारी दुनिया का बोझ हम उठाते हैं' में भी ट्रेन और रेलवे प्लेटफॉर्म के दृश्य नजर आते हैं। इन लोकप्रिय गीतों के अलावा भी रेल में हर मूड, सिचुएशन के गानों, दृश्यों की लंबी लिस्ट है। *